इस्लाम

का परिचय

इसके सिद्धांतों,मूल्यों और विरासत
का संक्षिप्त मे विवरण

अत्यधिक धन्यहै वह , जिसने अपने सेवक (मुहम्मद) को (सही और गलत का) मानदंड बताया है, ताकि यह सभी मानव जाति के लिए एक चेतावनी हो।

पवित्र कुरान २५:१

इस्लाम का परिचय

इसके सिद्धांतों,मूल्यों और विरासत का संक्षिप्त मे विवरण

Islamic Information Center

चौथा प्रकाशन: धू अल-हिज्जा 1447 / जून 2026

प्रतिलिप्याधिकार

इस्लाम को समझने हेतु लोगो की मदत के उद्देश्य से इस्लामिक इनफार्मेशन सेंटर, सीभी भाषा में इस पुस्तक को मुद्रित करने की अनुमति देता है, **इस शर्तपर** कि इस पुस्तक मे कोई भी बदलाव ना किया जाये और यह व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए ना हो।

लेखक और प्रकाशक

इस्लामिक इनफार्मेशन सेंटर
सुल्तान क़ाबूस ग्रैंड मॉस्क, मस्कत
सल्तनत - ए – ओमान
www.iicoman.com
ईमेल: info@iicoman.com

इसके सिद्धांतों,मूल्यों और विरासत का संक्षिप्त मे विवरण

विषय सूचि

अनुभाग *पृष्ठ*

प्रस्तावना १
१ इतिहास में इस्लाम का वर्णन २
२ इस्लाम का अर्थ और मूल सिद्धांत ८
३ विश्व निर्माता - अल्लाह – की प्रकृति और विशेषताए १९
४ नबी मोहम्मद – उन का जीवन और व्यक्तित्व २१
५ नबी मोहम्मद की प्रमाणिकता २४
६ पवित्र कुरान का इतिहास और संदेश ३०
७ पवित्र कुरान की प्रमाणिकता ३९
८ पैग़म्बर के कथनों, कार्यों या आदतों का वर्णन ४२
९ मृत्यु के बाद का जीवन ४४
१० अन्य धर्मों पर इस्लाम का विचार ४९
११ इस्लाम में यीशु का स्थान ५२
१२ इस्लाम के अलावा सभी धर्म ग़लत कियु है? ५५
१३ नास्तिकता और अज्ञेयवाद पर फिटकार ५७
१४ इस्लाम में महिलाओं का स्थान ६१
१५ धार्मिक अतिवाद और हिंसा ६२
१६ इस्लामि जिहाद ६४
१७ इस्लामी शरीयत (क़ानून) ६६
१८ मुस्लिम में विभाजन ६८
१९ इस्लाम में मौलिक मानवाधिकार ७०
२० इस्लाम में सांस्कृतिक विविधता ७४
२१ धर्म क्यों महत्वपूर्ण है ? ७८
२२ मुसलमान कैसे बन सकते है ८०

शब्दकोष ८२
समाप्ति नोट ८४
संदर्भ........ ८८

प्रस्तावना

अल्लाह ने मनुष्य को अपनी इबादत (भक्ति) और आज्ञाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने के एकमात्र उद्देश्य से बनाया है। इसलिए अल्लाह ने अपना धर्म स्थापित किया, जो अपने आपको अल्लाह की इच्छा अनुसार समर्पित कर देना है (जिसे अरबि मे इस्लाम कहते है), इस धर्म (इस्लाम) की ओर मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए रसूल, नबी, यानि दूत भेजे और धार्मिक शास्त्रों, पवित्र ग्रंथो का वरदान किया । इस लिए, सभी मनुष्यों को परमेश्वर के इस धर्म को जानने का अधिकार है और उनको आस्था के मामलों में सूचित विकल्प के चयन का अवसर मिलना चाहिए । दुर्भाग्य से, शुरू से ही, इस्लाम अपने आलोचकों द्वारा विकृत किया गया है और इस कारण, इस्लाम हमेशा गलत समझा गया है जिसकी वजह से आध्यात्मिक सत्य जनने वालों के लिए बाधा होती है । कुछ अपवादों के अलावा, तथाकथित विशेषज्ञों द्वारा इस्लाम के बारे में आज जो कुछ भी प्रस्तुत किया गया है, वह विभिन्न पूर्वाग्रहों से प्रभावित है । वास्तव में, इस्लाम के अलावा, दुनिया में ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसके बारे में पश्चिमी लेखकों ने बहुत कुछ लिखा हो लेकिन नकारात्मक और भ्रामक तरीके से । पिछले कुछ दशकों से इस्लाम के बारे मे इतना कुछ लिखने के बाद भी, ऐसे साहित्य बहुत कम हैं जो सत्य पर आधारित इस्लाम के प्रामाणिक कार्य उजागर करें, जो ध्रुवीकरण के बजाय आपसी समझ बनाने मे लाभदायक हों ।

इस पुस्तक का उद्देश्य इस महान धर्म पर प्रकाश डालना और इसके बारे में विकृतियों और भ्रांतियों को दूर करना है जिससे सभी को इस्लाम, उचित और सच्चे परिप्रेक्ष्य में, समझने का अवसर मिले और उनका सही मार्गदर्शन हो । हमारी संस्कृति के आधार पर हम आस्था को समझते और चुनते हैं लेकिन, केवल ज्ञान के माध्यम से ही, हम सत्य और असत्य मे फर्क कर पता कर सकते हैं के सत्य वास्तव में क्या है ।

इतिहास में इस्लाम का वर्णन

इस्लाम धर्म और सभ्यता दोनों है, यह एक ऐतिहासिक वास्तविकता है जो चौदह शताब्दियों से मानव इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है और सभी महाद्वीपों के विशाल क्षेत्र मे फैला है। इस्लाम एक आध्यात्मिक वास्तविकता है जिसने सभ्यताओं, विशेष रूप से पश्चिमी सभ्यता के कुछ पहलुओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और दुनिया भर में कई मनुष्यों की जीवन शैली को बदल दिया । आज विभिन्न नस्लीय, जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लगभग दो अरब लोग मुसलमान हैं और इस्लामी शरीयत (कानून) का पालन करते है। आज की दुनिया में इस्लाम की न केवल प्रमुख उपस्थिति है, बल्कि इसका प्रभाव पश्चिम, एशिया और अफ्रीका में भी स्पष्ट है। यही कारण है की समकालीन मानवता की स्थिति से संबंधित लोगों के लिए , पश्चिमी बौद्धिक और सांस्कृतिक इतिहास में रुचि रखने वालों के साथ-साथ धर्म और उसकी आध्यात्मिकता की वास्तविकता की और आकर्षित लोगों के लिए इस्लाम का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है।

उम्मत (एक समुदाय) की संकल्पना के महत्त्व या मुसलमानो की समग्रता, जिससे इस्लामी दुनिया का गठन होता है, इनको जाने बिना इस्लाम को समझा नहीं जा सकता । इस्लामि उम्मत एक है, जो ईश्वरीय एकता और संप्रभुता के कुरानि संदेश और नबी मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर) १ के दूत होने और ईश्वरीय कानून (शरीयत) की एकजुटता से बाध्य है। मुस्लिम भाईचारे के शक्तिशाली बंधन से एकजुट होते हैं, बावजूद उन तमाम उथल-पुथल के जिससे कुछ मुस्लिम समाज परेशान है, यह एक ऐसा बंधन है, जो आज भी दृढ़ता से महसूस किया जाता है । हालाँकि मुसलमान अब राजनीतिक रूप से एकजुट नहीं हैं, फिर भी वे एक धार्मिक समुदाय हैं । दुनिया में शायद ही कोई जातीय या नस्लीय समूह होगा, जिसमें इस्लामि उम्मत से संबंधित कुछ सदस्य न हों । शुरू से ही, इस्लाम ने धर्म के रूप में, जातिवाद, विभाजन और जनजातीयता के सभी रूपों का दृढ़ता से विरोध किया है । इसलामी उम्मत में दुनिया के सभी जातीय और नस्लीय समूह शामिल हैं जो एशिया, अफ्रीका, यूरोप, उत्तर और दक्षिण अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों में फैले हैं ।

इस्लाम का इतिहास उस इस्लामी समाज, संस्थानों और सभ्यता के इतिहास से अविभाज्य है जिसमें यह जाहिर हुआ है । पैगम्बर की मक्का से मदीना के प्रवास की अवधि (जो मदीना में पहले इस्लामिक समाज की स्थापना का प्रतीक है) से उनकी मृत्यु तक और तुरंत बाद चार सही-निर्देशित खलीफाओं का शासन काल (६२२ ई से ६६१ ई) इस्लामी इतिहास में एक अनूठी अवधि का गठन है । यह एक आदर्शवादी दौर रहा है जिसमें से बाद के आने वाले मुसलमानों ने अपने लिए मार्गदर्शन की राह तलाश की है ।

पहले चार 'राशिदून' (सही निर्देशित) खलीफाओं के तुरंत बाद के शाशक ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी सीरिया का शहर दमिश्क को बनाया गया, लेकिन उन्होंने सही ढंग से निर्देशित खिलाफत को परिवर्तित कर एक वंशानुगत राजवंश स्थापित किया । पहले मुस्लिम राजवंश, उमैयद खिलाफत ने, मध्य एशिया से लेकर स्पेन और फ्रांस तक शासन किया था, उमैयद खिलाफत ने संचार, प्रशासन, कानून और सैन्य संस्थानों की स्थापना की, इन में से बहुत सी संस्था कई शताब्दियों तक प्रचलित और सेवा में रही । उमैयद

स्पेन के शहर ग्रानादा में स्थित अलहम्ब्रा पैलेस

क्षेत्रफल में सार्वजनिक प्रशासन, वाणिज्य, कृषि और डाक जैसी सेवाओं में बहुत से सुधार प्रस्तावित किये गए थे । उमय्यद राजवंश उस समय चरम पर था, जब उन्होंने अरबी भाषा को मुस्लिम दुनिया की लोक भाषा बनाने का निर्णय लिया था और एक सामान्य मुद्रा लागु करने के लिए सोने और चांदी के सिक्कों का खनन शुरू किया था । दमिश्क में उमय्यद मस्जिद और यरूशलेम में गुम्बदे -ए –सखरा उमय्यद की महत्वपूर्ण वास्तु-काला की उपलब्धियों में से हैं।

७५० (इ) में अब्बासी खिलाफत ने उमैयद खिलाफत को उखाड़ फेका और नए शहर बगदाद को इस्लाम की नयी राजधानी बनायी । अब्बासी शासन उस अवधि को चिह्नित करता है जिसमें इस्लामी सभ्यता अपने चरम पर पहुंच गई थी । अब्बासि शासक कला, विज्ञान और दर्शनशास्त्र के महान संरक्षक थे । यह वह समय था जब इस्लामी विज्ञान और दर्शनशास्त्र दोनों फल फूल रहे थे । अब्बासियो ने एक बौद्धिक संस्कृति का निर्माण किया, जिसने शास्त्रीय यूनान और रोम साम्राज्य को टक्कर दी । जैसे जैसे समय बीतता गया, मुस्लिम साम्राज्य से बगदाद का केंद्रीकृत अधिकार नए स्वतंत्र सत्ता और सीखने के केंद्रों में विकसित हो गया जहां शिक्षण और अनुसंधान संस्थान एक दूसरे को प्रति द्वंद्वी बने । बगदाद, दमिश्क, बुखारा, काहिरा, फ़ेज़, कॉर्डोबा, शिराज, आदि जैसे केंद्रों से दुनिया भर के ज्ञान प्राप्ति में रूचि रखने वालों को फायदा हुआ । बहुज्ञानि लोग जैसे अल-किदी, अल-फ़राबी, इब्न सिना, इब्न रुश्द, इब्न अल-हयथम, अल-बिरूनी, अल-ख्वारिज़्मी और कई अन्य लोग नए विचारों वाले के लिए जाने जाने लगे । मुस्लिम जगत में दर्शनशास्त्र, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और विज्ञान की अधिकांश गतिविधियाँ अरबी भाषा में आयोजित की जा रही थीं , जो उस समय अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति की भाषा थी । यह वह अवधि थी जब उमय्यद खिलाफत के साथ शुरू होने वाले इस्लामि कानून (शरीयत) के संहिताकरण को अंतिम रूप दिया गया था और कानून के पारंपरिक स्कूल जो आज भी मौजूद हैं जैसे सुन्नी, शिया और इबादी इनकी स्थापना हुई थी । यही वह दौर था जब बुखारी, मुस्लिम और अन्य लोगों द्वारा हदीस के निश्चित और विहित संग्रह स्थापित किए गए थे । नौवीं और दसवीं शताब्दी के मुस्लिम शहर बगदाद और कॉर्डोबा सबसे सभ्य शहर और ज्ञान का सागर थे जिन से बौद्धिक और सांस्कृतिक लोग आकर्षित थे । जब फ्रांस, इंग्लैंड या इटली के शासकों को एक सलाहकार, शल्य चिकित्सक,

वास्तुकार, यहां तक कि एक संगीतकार या निपुण दर्जी की आवश्यकता होती थी, तो वे बगदाद या कॉर्डोबा से संपर्क करते । मुस्लिम शहरों में पत्थरो के पक्के बने घर और महल थे , वहां पक्की और रौशनी वाली सड़के , बहते पानी, विश्वविद्यालय और पुस्तकालय, अस्पताल और औषधालय, कला दीर्घाओं और सार्वजनिक स्नानागार थे। मध्यकालीन मुसलमान पहले से ही व्यक्तिगत स्वच्छता जैसे साबुन, सौंदर्य प्रसाधन और इत्र के उन्नत उत्पादों का सेवन कर रहे थे। अब्बासि खिलाफत काल वास्तव में विज्ञान और नवाचार, उच्च जीवन स्तर और आधुनिक समाज के मामले में मुसलमानों के "स्वर्ण युग" का प्रतीक है।

धीरे धीरे, अब्बासी राजवंश की शक्ति कम होने लगी और १५१७ ई में तुर्क उस्मानियों ने अब्बासियों का शाशन ख़त्म कर दिया और उस्मानि खिलाफत कायम की। खिलाफते उस्मानिया, ओटोमन साम्राज्य, सुल्तान सुलेमान के अंतर्गत अपने चरम पर पहुंचा, जिन्होंने पूर्व कॉन्स्टेंटिनोपल बीजान्टिन साम्राज्य का एक शहर (आज के इस्तांबुल) से शासन किया। उनकी मृत्यु के समय तक, पूरे सीरिया, मिस्र, उत्तरी अफ्रीका, अरब प्रायद्वीप और

इस्तांबुल, तुर्की में सुलेमानीया मस्जिद का आंतरिक दृश्य

पूर्वी यूरोप के कई हिस्से उनके शासन के अधीन थे। तुर्क (ओटोमन) सुल्तानों ने बेजोड़, शानदार और दक्षता के साथ एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया। उस समय के अन्य राज्य उनके स्तर तक नहीं पहुँच सके थे । तुर्क (ओटोमन) सुल्तानों ने अपने साम्राज्य के विभिन्न तत्वों को एक संस्कृति में जबरदस्ती शामिल नहीं किया; वे काफी सहिष्णु और बहुलवादी थे। ओटोमन सुल्तानों ने ऐसे ढांचा प्रदान किया, जहां विभिन्न समूह शांति से रह कर अपने स्वयं के विश्वासों, संस्कृति, कानूनों और अपने सदस्यों और नेताओं के प्रति वफादारी का पालन करते थे । तुर्क शासक एक स्थायी और सफल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहे, जो छह शताब्दियों तक चला । सत्रहवीं से बीसवीं सदी में यूरोपी औपनिवेशिक विस्तार देखा गया जब गैर मुस्लिम व्यापारियों और मिशनरियों, सैनिकों और औपनिवेशिक प्रशासकों का मुस्लिम भूमि पर बहुत अधिक वर्चस्व और प्रभाव बढ़ा । पुर्तगाली, स्पैनिश, डच, अँगरेज़ और फ्रांसीसी सभी ने औपनिवेशिक साम्राज्य का विकास किया, और चीनी और रूसियों ने भी अपने क्षेत्रों को मुस्लिम देशो में विस्तारित किया । इस तरह का विदेशी वर्चस्व न केवल कई मुसलमानों के लिए अपमानजनक था, बल्कि इसने इस्लामी समाज की नींव को भी खतरे में डाल दिया क्योंकि यूरोपीय शासकों ने पारंपरिक मुस्लिम शैक्षणिक, कानूनी और सरकारी संस्थानों को पश्चिमी विचार और संस्कृति के साथ बदल दिया। यूरोपी लोगों ने ईसाई-प्रभाव, धर्मनिरपेक्ष और भौतिकवादी सांस्कृतिक मूल्यों को विशेषाधिकार प्रदान करके मुस्लिम क्षेत्रों के धार्मिक लोकाचार को कम और दुर्बल कर दिया। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक ऑटोमोन शाशन बहुत कमज़ोर होगया यहाँ तक की प्रथम विश्व युद्ध के बाद वह पराजित और समाप्त हो गया । ओटोमन साम्राज्य के पतन के बाद, वर्तमान तुर्की गणराज्य की स्थापना पश्चिमी शैली के धर्मनिरपेक्ष मॉडल के आधार पर की गई थी. शेष ओटोमन इलाक़ो ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली ।

आधुनिक समय में अपने पारंपरिक दृष्टिकोण पर आलोचनाओं और हमलों के बावजूद भी दुनियाभर में मुसलमानों की बड़ी संख्या अपनी परंपरा और रीति रिवाज़ का पालन कर रही है । आज इस्लाम को समझने के लिए, महत्वपूर्ण है यह समझना कि विभिन्न धर्मों का इतिहास एक ही प्रक्षेपवक्र का पालन नहीं करते हैं। समय बितने के साथ उनके सिद्धांतो में बदलाव देखा गया है। ईसाई धर्म में सोलहवीं शताब्दी में सुधार आंदोलन शुरू हुआ जिसके

परिणाम स्वरूप प्रोटेस्टेंट वाद का जन्म हुआ । यहूदी धर्म ने सुधार और रूढ़िवादी दोनों आंदोलन का अनुभव किया इनके विपरीत इस्लाम में अब तक सैद्धांतिक या धार्मिक रूप से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और भविष्य में भी ऐसा होने की सम्भावना नहीं है। इस्लाम का धार्मिक जीवन और विचार अपने परम्पराओ के ढांचे में अधिक समय से बने रहे है । आधुनिकतावाद और तथाकथित कट्टरवाद ने इस्लामी समाज के और इस्लामी देशों के कुछ क्षेत्रों में पारंपरिक इस्लामिक जीवन में बदलाव लाया है, लेकिन कोई भी धर्मविज्ञानी या न्यायिक विश्वदृष्टि बनाने में असमर्थ रहे हैं जो पैगंबर के समय और चार सही-निर्देशित खलीफाओं के समय से चली आरही परमराओ को चुनौती दे सके। दुनियाभर के अधिकांश मुस्लिम अभी भी पहले वर्णित, बताई गयी, इस्लामी पारंपरिक संस्कारों का पालन करते हैं, और वह अपनी जीवन की शैली को पारंपरिक रूप से इस्लाम से जुड़ी घटनाओं के रूप में समझते और व्यतीत करते हैं । इसके अलावा, कुरान, हदीस, शरीयत और इन जैसे पारंपरिक इस्लामी विज्ञान, इस्लामी कानूनी प्रणालियों और पारंपरिक इस्लामी शिक्षा पर हमले और ग़लत आरोपों के बावजूद भी, सदियों से वैसे ही चले आरा रहे है ।

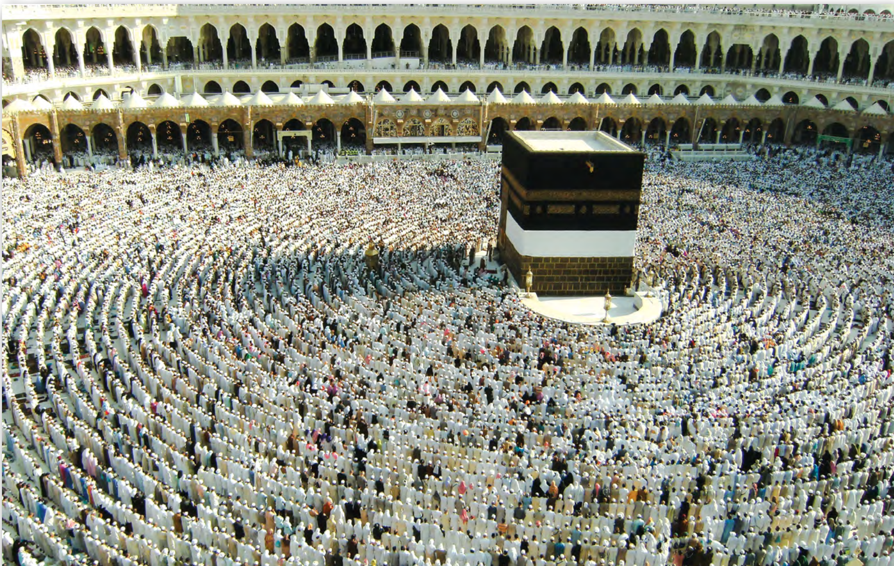

मक्का में, काबा, एक अल्लाह की इबादत (भक्ति) के लिए धरती पर बनाया गया पहला घर । (कुरआन ३ : ९६)

इस्लाम का अर्थ और मूल सिद्धांत

इस्लाम धर्म की परिभाषा यह है की एक अल्लाह को मानना, उसकी इच्छा को स्वीकार करना और उनका पालन करना, जैसा की इस्लाम के आखरी पैगम्बर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर) पर अवतरित हुआ था ।

इस प्रकार, इस्लाम का अर्थ है, अल्लाह की इच्छा के प्रति ईमानदार और शांतिपूर्ण समर्पण । अल्लाह की इच्छा के अधीन होने का तात्पर्य है, अल्लाह, जो सब का निर्माता है उसके प्रति सच्ची श्रद्धा, और उसकी इच्छाओ पर सम्पूर्ण समर्पण, और ये ईश्वर के साथ, स्वयं के साथ, अन्य प्राणियों के साथ और पर्यावरण के साथ शांति के लिए सही और उचित स्थिति हैं । जो लोग इस्लाम धर्म का पालन करते हुए ईश्वर (अल्लाह) की इच्छा को मानते और समर्पण करते हैं, उन्हें **मुसलमान** कहते है।

इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है । यह वही धर्म है जो सारे पैगम्बरो, आदम से लेकर नूह, अब्राहम, इस्माइल, इसहाक और साथ ही मूसा, जीजस और अंत में मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उन पर हो) पर अवतरित हुआ था। ये सभी नबी, पैगम्बर मुस्लिम थे क्योंकि वे सभी केवल अल्लाह की इबादत (भक्ति) करते थे और केवल अल्लाह ही की इच्छा अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे ।२ इसी तरह, अल्लाह के सभी पैगंबरों द्वारा बताए गए, प्रचारित धर्म का पालन करने वाले को मुस्लिम कहते हैं । इस्लाम शब्द के इस अंतर्निहित अर्थ के संदर्भ में अल्लाह ने पवित्र कुरान (३ :१९) में घोषणा की है।

ईश्वर की दृष्टि में धर्म उसकी इच्छा (इस्लाम) को मानना और पालन करना है

इस्लाम **आस्था (ईमान) के छह स्तंभ** और **धर्म** (इस्लाम) **के पांच स्तंभ** पर आधारित है । आस्था, ईमान के स्तंभ पर दृढ़ विश्वास को कहते है और धर्म उस विश्वास का व्यावहारिक प्रतिज्ञान है । इस्लाम धर्म में आस्था पुरोगामी शर्त है, क्योंकि आस्था सृष्टिकर्ता की मान्यता, अभिस्वीकृति और उसकी दिव्यता, आधिपत्य और सेवा, भृत्यभाव के अधिकार का नाम है, (अरबी भाषा में इन्हे उलूहिया, रुबूबियह, उबूदियह कहते है)

आस्था के छह स्तंभ

आस्था के स्तंभ के बारे में पवित्र कुरान के विभिन्न छंदों में वर्णित हैं ।[३] उदाहरण के लिए, आस्था के पहले स्तंभ पर अल्लाह पवित्र क़ुरान के अध्याय ११२ में कहते हैं:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ * اللَّهُ الصَّمَدُ * لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ * وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ

कहो: वह अल्लाह है, बिलकुल अकेला, अल्लाह जो शाश्वत और निरपेक्ष है, न उसकी कोई संतान है और ना ही वह किसी की संतान है; और कोई उसका समकक्ष नाही है

पहला स्तंभ:

यह विश्वास कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत (भक्ति) के योग्य नहीं है । वह ब्रह्मांड का निर्माता है, एक और अकेला, जिनके गुण अद्वितीय और अविभाज्य हैं और उसका कोई साथी नाही है न कोई उसके साझेदार हो सकते हैं । विश्वास के इस सिद्धांत को एकेश्वरवाद कहा जाता है (जिसे अरबी भाषा में अत-तौहीद कहते है)

आस्था के इस स्तंभ का महत्व: *(i) सृष्टिकर्ता की एकता का अर्थ है सृष्टि में उद्देश्य की एकता और इसलिए धर्म की एकता ही जीवन के मार्ग की एकता है । आज अधिकांश मानवता आध्यात्मिक निराशा और अरुचि से जूझ रही है क्योंकि यह जीवन में उद्देश्य की एकता को महत्व नाही दे रही है (ii) ईश्वर के गुणों को अन्य प्राणियों को समर्पित करना अंधविश्वास जनम देता है जिससे भय, भ्रष्टाचार और शोषण पैदा होता है।*

दूसरा स्तंभ:

फ़रिश्ते या देवदूतों में विश्वास, जो अल्लाह के आध्यात्मिक सेवक और प्रतिनिधि हैं । मनुष्यों के विपरीत, फ़रिश्ते या देवदूत आत्माएं हैं जिनका कोई भौतिक शरीर नहीं है । उनकी प्रकृति, स्वरुप सदा के लिए अल्लाह की इबादत (पूजा) करना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है ।

आस्था के इस स्तंभ का महत्व: *उन बातों पर विश्वास करना, जो हमारी मानवीय शारीरिक अनुभूति से परे हैं, विश्वास की आवश्यकताओं में से एक हैं । विश्वास का यह स्तंभ, अल्लाह द्वारा किये गए निर्माण, जो हमारी शारीरिक धारणा के परे है, को महसूस करने और उसकी सराहना करने के लिए मानव बौद्धिक क्षमता को और बढ़ाता है और आध्यात्मिक समझ और अंतर्दृष्टि का मार्ग खोलता है ।*

तीसरा स्तंभ:

सभी दिव्य ग्रंथों या शास्त्रों में विश्वास जो अल्लाह के दूतों के ज़रिये अवतरित किए गए थे । उदाहरण के लिए पवित्र ग्रन्थ ज़बूर जो दाउद पर अवतरित हुई पवित्र ग्रन्थ तौरात जो मूसा पर अवतरित हुई, पवित्र ग्रन्थ इंजील जो ईसा मसीह पर अवतरित हुई और आखरी ग्रन्थ पवित्र कुरआन जो पैगम्बर मुहम्मद पर अवतरित हुई (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो उन सब पर)

आस्था के इस स्तंभ का महत्व: *यह एक तार्किक सिद्धांत है क्योंकि सभी शास्त्र और ग्रन्थ विश्वास और नैतिकता के समान मूल सिद्धांतों के साथ एक ही निर्माता, अल्लाह से आए है । एक शास्त्र की स्वीकृति और दूसरे की अस्वीकृति एक विरोधाभास होगी । और यह भी समझ से बाहर है कि अल्लाह मानव जाति के लिए अलग और विरोधाभासी संदेश भेजेगा । कुरआन पिछले धर्मग्रंथों की पुष्टि करता है, मानव जाति के लिए ईश्वर के संदेश को पूरा करता है और पूर्व संदेशवाहकों, दूतों के संदेशों को, जिन्हे मनुष्य द्वारा परिवर्तित कर दिया गया है, ठीक करता है ।*

चौथा स्तंभ:

आदम से लेकर आखिरी संदेशवाहक मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उन पर हो) तक अल्लाह के सभी दूतों में विश्वास रखना

विश्वास के इस स्तंभ का महत्व: *यह भी एक तार्किक सिद्धांत है क्योंकि सभी दूत एक ही निर्माता, अल्लाह कीओर से आए थे और मानव जाति के लिए एक ही मूलसंदेश लाये थे । एक दूत की स्वीकृति और दूसरों की अस्वीकृति न केवल एक विरोधाभास है, बल्कि ईश्वर के धर्म में विभाजन भी पैदा करता है।*

पांचवा स्तंभ:

प्रलय, फैसले के दिन में विश्वास. स्वर्गदूतों, फरिश्तों के विपरीत, मनुष्यों को पसंद के विकल्प की स्वतंत्रता दी गई है: कोई अल्लाह की आज्ञा का पालन करना या अवज्ञा करना चुन सकता है । हालांकि, यह स्वतंत्रता अल्लाह के प्रति जिम्मेदारी और जवाबदेही के साथ आती है । प्रलय या फैसले के दिन हमें उन विकल्पों का हिसाब देना होगा जो हमने इस जीवन में किए हैं । जिन लोगों ने सही विकल्प का चुनाव किया और अल्लाह के संदेश का पालन करते रहे, वे अनंत काल तक के लिए स्वर्ग में जाएंगे और जिन्होंने गलत चुनाव किए हैं और अल्लाह के संदेश की अवहेलना करते हैं वे अनंत काल के लिए नर्क में जाएंगे।

आस्था के इस स्तंभ का महत्व: *इस स्तंभ का तात्पर्य है ईश्वर के प्रति जवाबदेही और इस दुनिया में हमारे कार्यों के लिए जवाबदेही । सच्ची न्याय और शाश्वत संतुष्टि के लिए हमारी लालसा और आशा तब ही प्राप्त होगी जब न्याय, फैसले के दिन सच्चे और पूर्ण दिव्य न्याय की स्थापना की जाएगी ।*

छठा स्तंभ:

दैवीय संकल्प और नियति में विश्वास: सृष्टि में होने वाली हर चीज़ (अच्छा, बुरा या उदासीन) उन कानूनों के अनुसार (*अरबी भाषा मे जिसे क़ज़ा व क़द्र कहते है*) होती है जो अल्लाह ने अपने अनंत ज्ञान में पूर्व निर्धारित किया है । सृष्टि में कुछ भी अल्लाह के शासन के बाहर नहीं है और इन (दोनों भौतिक और आध्यात्मिक) कानूनों और मापदंड के माध्यम से नियंत्रण में है । इसके अलावा, अल्लाह न केवल अपने कानूनों और माप के माध्यम से पूर्ण नियंत्रण रखता है, बल्कि उसके पास सभी चीजों का पूर्ण ज्ञान भी है जिसमें सभी स्थान और समय

शामिल हैं और अल्लाह को अतीत, वर्तमान और भविष्य में घटित होने वाली हर चीज का संज्ञान है । पवित्र क़ुरआन कहता है (६:५९);

उसी के पास परोक्ष की कुंजियाँ है, जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। जल और थल में जो कुछ है, उसे वह जानता है। और जो पत्ता भी गिरता है, उसे वह निश्चय ही जानता है। और धरती के अँधेरों में कोई दाना हो और कोई भी आर्द्र या सूखी चीज़ हो, निश्चय ही एक स्पष्ट किताब में मौजूद है ।

मानव जीवन के प्रवाह और ज्वार का अल्लाह को सम्पूर्ण ज्ञान है । हालांकि, अल्लाह के इस मानव कृत्यों का ज्ञान किसी व्यक्ति को उन कृत्यों को करने के लिए मजबूर नहीं करता है, उदाहरण के लिए, खगोलविद अपने वैज्ञानिक ज्ञान से कई साल पहले ही भविष्य में होने वाले सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी करते है लेकिन सूर्य ग्रहण उनके ज्ञान या भविष्यवाणी के कारण नहीं होता है । इसी तरह, अल्लाह अपने असीम ज्ञान (समय और स्थान तक सीमित नहीं) रखने से जानता है कि मनुष्य क्या करेंगे, लेकिन यह उस व्यक्ति को उस कार्य को करने के लिए मजबूर नहीं करता है I

इसलिए, उपर्युक्त सिद्धांत मनुष्य को दी गई इच्छा, विकल्प की स्वतंत्रता को नकारते नहीं हैं; इन सब का अर्थ है कि हमारी पसंद या विकल्प के तरीके और साधन हमेशा इनका अनुसरण करेंगे, (i) अल्लाह के कानून (ii) हमारी विकल्प या पसंद के परिणाम ईश्वरीय मापदंड के अनुसार होंगे (iii) अल्लाह को हमारे कार्यों का पूर्व ज्ञान है, लेकिन हम तब भी अपनी इच्छा, और कार्य के लिए जवाबदेह होंगे ।४ इसके बावजूद के, मनुष्य के पास इच्छा, विकल्प की स्वतंत्रता है और वे अपनी पसंद और अपने कार्यों के ज़िम्मेदार हैं, लेकिन उनके पास अपनी इच्छा पैदा करने की रचनात्मक शक्ति नहीं है ।

तुमको और जिसको तुम लोग बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है
(पवित्र क़ुरान ३७:९६)

इसका मतलब यह है कि मानव की इच्छा की स्वतंत्रता के संबंध में, अल्लाह ने "मानवीय इच्छा" को "ईश्वरीय इच्छा" के लिए एक शर्त माना है या मानवीय कार्यों के कुछ कृत्यों की दिव्य दीक्षा से संबंधित बताया है । दूसरे शब्दों में, मनुष्य उन कार्यों की कामना करते हैं, और अल्लाह उन्हें पूरा करता है (यदि अल्लाह उन्हें पूरा करने का फैसला करे तो) । इस तरह "मानव इच्छा" "ईश्वरीय इच्छा" के अनुसार संचालित होती है । यह कहना संभव है,

अच्छाई और बुराई दोनों का रचनात्मक हिस्सा अल्लाह का है, फिर भी, मानव पसंद के परिणामस्वरूप बुराई का निर्माण होता है जिसका कारन मानव अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग नहीं करता या उसका दुरुपयोग करता है । अल्लाह कृत्यों और उसका परिणाम बनाता है ।

जब तुमको कोई लाभ पहुंचे, तो वो अल्लाह की तरफ़ से है, और जब तुमको कोई नुक्सान हो, तो वो ख़ुद तुम्हारे कारन है । (पवित्र क़ुरान ४:७९)

अल्लाह के दृष्टिकोण से, बुराई का निर्माण या बुराई कीअनुमति देना अपने आप में बुराई नहीं है, लेकिन बुराई को चुनना और करना बुराई है । ईश्वर बुराई का चयन नहीं करता, इंसान करता है ।

आस्था के इस स्तंभ का महत्व: *सृष्टि और निर्माण पे अल्लाह के पूर्ण नियंत्रण और शासन में विश्वास, अल्लाह, सृष्टि पर उसकी संप्रभुता के हमारे विश्वास की पुष्टि करता है । आस्था का यह स्तंभ, अल्लाह का अपनी रचना के प्रति दया और करुणा वाले गुण, विशेषता दर्शाता है, और विश्वासियों को आंतरिक शांति प्रदान करता है, और उनके दिलों को मजबूत करता है।*

विश्वास के ये छह सिद्धांत, स्तंभ मानव बुद्धि को आध्यात्मिक समझ और अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इसके अलावा, वे एक "आस्तिक" को विश्वासी को पूर्ण अर्थ में परिभाषित करते हैं; इन सिद्धांतों में से किसी एक का इंकार, जैसे कि एक नबी, देवदूत पर विश्वास करना और दूसरों को नकारना , मानव को "अविश्वासी" बनाता है

अज़ान: प्रार्थना का आह्वान

अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है

अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई दूसरा भक्ति के काबिल नहीं

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई दूसरा भक्ति के काबिल नहीं

मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल (दूत) हैं

मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल (दूत) हैं

आओ नमाज़ की ओर, आओ नमाज़ की ओर

आओ सफलता की ओर, आओ सफलता की ओर

अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है

अल्लाह के सिवा कोई दूसरा भक्ति के काबिल नहीं

प्रार्थनाओं का आह्वान लोगों को अनन्त सफलता के लिए आमंत्रित करता है । यह मानवता के लिए एक निरंतर स्मरण है कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत (भक्ति) के योग्य नहीं है, और मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उस पर हो) अल्लाह के पैगम्बर, संदेशवाहक है I

धर्म के ५ स्तंभ

धर्म के पांच स्तंभ कुरान के विभिन्न श्लोकों में निर्धारित हैं ।५ उदाहरण के लिए, पहले स्तंभ के संबंध में, अल्लाह पवित्र कुरान में (४९ :१५) कहते हैं

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ

वास्तव में सच्चा विश्वास रखने वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास करते हैं और कोई संदेह नहीं करते और फिर उन्होंने अपने जीवन और अपनी संपत्ति के साथ अल्लाह के मार्ग में कड़ी मेहनत की I यही लोग सत्यवादी हैं।

पहला स्तंभ:

अपने दिल और दिमाग में यह घोषणा करना कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं है, और मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर) अल्लाह के पैगम्बर है । यह घोषणा निर्माता (एकेश्वरवाद) की एकता में विश्वास की पुष्टि करती है और यह कि पैगंबर मुहम्मद, (अल्लाह के शांति और आशीर्वाद हो उनपर), अल्लाह के अंतिम प्रेषित, पैगम्बर हैं । इसे शहादा कहा जाता है, यह एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है घोषित सत्य की गवाही देना, उसी पे कायम रहना और स्थापित करना ।

इस्लाम धर्म के पहले स्तंभ, विश्वास को, घोषित करने के बाद, मुसलमान निम्नलिखित स्तम्भों को उस विश्वास के व्यावहारिक प्रतिज्ञान के रूप में पूरा करने के लिए बाध्य है ।

दूसरा स्तंभ:

अल्लाह के लिए दिन में पांच बार इन समय में प्रार्थना करना, (अरबी भाषा में जिसे *सलाह* कहते है); भोर में, मध्याह्न के समय, दोपहर के बाद, सूरज निकलने के बाद और रात में । नमाज एक मध्यस्थ के बिना, अल्लाह के साथ एक सीधा संवाद हैं, और इसमें अल्लाह की महिमा और प्रशंसा के साथ-साथ उसके प्रति हमारा सम्मान भी शामिल है और हमारे लिए अल्लाह से दुआ, निवेदन है ।

धर्म के इस स्तंभ का महत्व: *अल्लाह प्रार्थना को एक स्मरण के साथ-साथ उसकी अवज्ञा के विरुद्ध सुरक्षा के रूप में वर्णित करता है I पवित्र क़ुरान (२० :१४ और २९ :४५) इस प्रकार, नियमित प्रार्थना हमें ईश्वर की चेतना को विकसित करने और बनाए रखने में मदद करती है (अरबी भाषा में इसे तक़्वा कहते है)* ६

तीसरा स्तंभ:

गरीबों और जरूरतमंदों को दान देना (अरबी में इसे *ज़कात* कहते है) । हर एक समर्पित मुसलमान को साल (चन्द्र वर्ष) में अपनी आमदनी का २.५ % हिस्सा ग़रीबों को दान में देना चाहिए, वह धन जो किसी ने पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान उपयोग नहीं किया है, जैसे कि धन, चांदी और सोने । ज़कात का भुगतान कृषि उत्पादों, बाजार के शेयरो, इत्यादि पर भी अनिवार्य है ।

धर्म के इस स्तंभ का महत्व: *ज़कात का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि धन समाज में साझा किया जाये, जिससे समाज में गरीबी, ईर्ष्या और कड़वाहट को समाप्त किया जा सके । ज़कात 'शब्द का अर्थ है शुद्ध करना', इस प्रकार अल्लाह की कृपा से ज़कात हमारे धन और हमारी आत्माओं को शुद्ध करता है ।*

चौथा स्तंभ:

इस्लामी चंद्र कैलेंडर का नौवा महीना, रमजान का पवित्र महीने है, इसमें भोर से सूर्यास्त तक उपवास रखते है । दिन के दौरान एक मुसलमान को खाने, पीने, और यौन गतिविधियों से परहेज करना होता है, साथ ही साथ हर वह चीज़ से दूर रहना है जो इस्लाम धर्म में मना है जैसे कि पीठ पीछे बुराई करना, झूठी गवाही देना, आदि।

***धर्म के इस स्तंभ का महत्व:** उपवास एक अभ्यास है जो किसी की इच्छाशक्ति, धैर्य को मजबूत करने में मदद करता है और अंतत मनुष्य के विश्वास और ईश्वर चेतना (तक़वा) को विकसित करता है । यह हमें उन लोगों को याद दिलाता है जो हम से कम भाग्यशाली हैं; वे लोग जो मुश्किल से एक दिन का भोजन का इंतेज़ाम कर पाते हैं ।*

पांचवा स्तंभ:

मक्का की तीर्थयात्रा (अरबी भाषा में हज) जीवन में एक बार उनको करना चाहिए जो शारीरिक और आर्थिक रूप से हज करने में सक्षम हैं।

मक्का में इब्राहीम का स्थान (मक़ाम इब्राहिम), जहाँ इब्राहिम (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर शांति उस पर) खड़े थे जब काबे का निर्माण काम चल रहा था

***धर्म के इस स्तंभ का महत्व:** तीर्थयात्रा, हज दुनिया भर के मुसलमानों की एक महान वार्षिक सभा है। यह मानव जाति की एकता, धर्म की एकता; ईश्वर एक है, मानवताएक है और उनका धर्म एक है, का प्रतिज्ञान और प्रदर्शन है । तीर्थयात्रा अल्लाह की पूजा और महिमा करने का एक रूप है, साथ ही पैगंबर इब्राहिम और उनके बेटे इस्माईल (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) की इबादत और बलिदानों का स्मरण है ।*

धर्म के इन सिद्धांतों ने भौतिक आवश्यकताओं और भौतिकवाद से मुस्लिम दिल और दिमाग को अलग कर आध्यात्मिक चेतना और विकास की और अग्रसर किया है । दूसरे शब्दों में, वे हमारे अस्तित्व को भौतिक आयाम से हटाकर आध्यात्मिक आयाम की तरफ बढ़ाते हैं, जहां हम निर्माता के प्रति हमारा कर्तव्य और उसके प्रति जवाबदेही और मानवता के प्रति हमारी जिम्मेदारी से निरंतर जागरूक रहते है ।

ओमान के मस्कत में सुल्तान कबूस ग्रैंड मस्जिद के मीनार का एक दृश्य । बीते समय में, मीनारों से प्रार्थनाओं के लिए आव्हान दिया जाता था । आज वे एक वास्तुशिल्प शैली के रूप में बने हुए हैं जो एक मस्जिद की पहचान करता है ।

अल्लाह - रचनाकार की विषेशताएं और गुण

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का एक नाम होता है, उसी प्रकार सृष्टिकर्ता और ब्रह्मांड के ईश्वर को उनके के **निजी** नाम “अल्लाह” से जाना जाता है। यह लिंग, बहुवचन या व्युत्पन्न के बिना एक अनूठा नाम है । अल्लाह न तो पुरुष है और न ही स्त्री । वह न तो एक पिता और नाही माँ से उत्पन्न है । वह बिना किसी नकल या प्रतिकृति के है, उसके जैसा कोई नाही उसका कोई जोड़ नाही है । अल्लाह ही एक मात्र, **अल-वाहिद** कहलाने के योग्य है, एक और अकेला । अल्लाह अनोखा है । इस प्रकार:

1. अल्लाह ही के लिए है (i) श्रेष्ठता की अनूठी विशेषताएँ जैसे उसकी स्वतंत्र अस्तित्व, स्व-सहायता, उसकी कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है, इत्यादि (ii) अतुलनीयता के अद्वितीय गुण जिस में शामिल है उसकी प्रकृति और निरपेक्ष क्षमताएं उदाहरण, वह सृष्टि के विपरीत है, वह हमेशा रहने वाला और जीवन देने वाला है, वह सब कुछ सुनने और देखने वाला है और सुनने और देखने की क्षमता प्रदान करने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है और अपनी इच्छा को लागु कराने में सक्षम है, इत्यादि । ये सभी विशेषताएँ अद्वितीय हैं और किसी अन्य द्वारा साझा नहीं हैं

2. अल्लाह ही के है सारे खूबसूरत नाम जो उसकी गुणों से उपजा है । इन नामों में बहुत दयालु, बड़ा कृपालु, क्षमाशील, सब जानने वाला और इसी तरह के अन्य नाम शामिल हैं ।

3. अल्लाह की दिव्यता, आधिपत्य और सेवा, भक्ति का अधिकार (अरबी भाषा में *उलूहिय्यह*, *रुबूबिय्यह*, *उबूदिय्यह*) किसी अन्य के साथ साझा नहीं किया जा सकता है ।

4. इस ईश्वरीय गौरव के साथ, अल्लाह नाम का अर्थ है, जिस पर हमारी पूर्ण आज्ञाकारिता और प्रेम है, और जिससे हमारी पूर्ण सुरक्षा और शरण प्राप्त होती है।

तदनुसार, अल्लाह के नाम का अर्थ सही एकेश्वरवाद को परिभाषित करता है । इसके अलावा, अल्लाह के नाम का गहन अर्थ होने से उसके लिए 'ईश्वर' शब्द का वर्णन अपर्याप्त है, लेकिन इस्लामी साहित्य में दोनों शब्दों को अक्सर समानार्थक रूप से उपयोग किया जाता है।

ब्रह्माण्ड और उसमें मौजूद सभी प्राणी के प्रवर्तक और संवाहक होने के नाते अल्लाह के प्रति हमारा विशेस नाता होना चाहिए, हमे उसका आज्ञाकारी होना चाहिए और उसके प्रति हमारी कृतज्ञता की पुष्टि होनी चाहिए । अल्लाह से जुडी प्रकृति, विशेषताओं और नामों को नकारना या उन्हें किसी अन्य व्यक्ति के साथ जोड़ना (जिसे अरबी में शिर्क कहा जाता है) उनके लिए एक घोर अकृतज्ञ व्यव्हार है, और इस प्रकार यह सबसे बड़ा पाप है जिसे अल्लाह कभी क्षमा नहीं करेगा, जब तक कि कोई पश्चाताप न करे । अल्लाह पवित्र कुरान में कहता है (४:४८);

अल्लाह उस पाप को नहीं माफ़ करता कि उसके साथ किसी की भागीदरी स्थापित की जाए, हाँ उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे क्षमा कर दे और जिसने किसी को अल्लाह का साझेदार बनाया जघन्य पाप करना है।

कोर्डोबा का मस्जिद - कैथेड्रल, कोर्डोबा की महान मस्जिद के रूप में भी जाना जाता है और वर्तमान समय, जिसका धार्मिक महत्त्व वाला नाम कैथेड्रल ऑफ द लेडी ऑफ अजमशन, कोर्डोबा के सूबा का कैथोलिक गिरजाघर है । इस संरचना को मुस्लिम वास्तुकला के सबसे निपुण स्मारकों में से एक माना जाता है।

पैगंबर मुहम्मद - उनका जीवन और व्यक्तित्व

मुहम्मद, (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उन पर), सभी मानव जाति के लिए अल्लाह के पैगंबर है । पैगंबर मुहम्मद से पहले, अल्लाह ने कई अन्य नबियों जैसे कि नूह, इब्राहिम, मूसा और इसा (अल्लाह एक आशीर्वाद और शांति हो इन सब पर) को भेजा । सभी नबी एक विशिष्ट राष्ट्र और एक विशिष्ट अवधि के लिए भेजे गए थे । मुसलमान अल्लाह के सभी पैगम्बरों को मानते हैं, उनका सम्मान करते हैं । पैगंबर मुहम्मद का मुसलमान सर्वोच्च सम्मान करते है क्योंकि वह पूरी मानवता के लिए भेजे गए पैगंबरों में से अंतिम पैगम्बर हैं और जिन्हे हमेशा के लिए जीवित एक समग्र संदेश के साथ पूरी मानवता के लिए भेजा गया है ।७e

उनकी वंशावली

पैगंबर मुहम्मद एक अरब थे और इब्राहीम के बेटे इस्माइल (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर) वंशज थे । वे मक्का में प्रमुख कुरैशी जनजाति के सम्माननीय बनी हाशिम कबीले से थे।

उनका जनम

पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) का जन्म मक्का में ५७० ई में हुआ था, जो पैगम्बर इसा (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) के लगभग छह शताब्दी बाद था । उनके माता-पिता दोनों महान वंश से थे और संबंधित थे । उनके पिता अब्दुल्ला, अब्दुल-मुत्तलिब के पुत्र, हाशिम के पुत्र, अब्द मनफ के पुत्र, कुसै के पुत्र, किलाब के पुत्र, मुर्राह के पुत्र थे । उनकी माँ आमिनाह, वहाब की पुत्री थी, जो अब्द-मनफ के पुत्र, ज़ुहरा के पुत्र, किलाब के पुत्र, मुर्राह के पुत्र थे।

पैगंबर मुहम्मद के पिता का निधन उनके जन्म से पहले ही हो गया था, और जब मुहम्मद सिर्फ छह साल के थे तब उनकी माँ की मृत्यु हो गई । उनका पालन-पोषण उनके दादा अब्दुल-मुत्तलिब ने किया । दो साल बाद वह अपने चाचा अबू तालिब की देखभाल में आए, जो अब्दुल-मुत्तलिब के निधन के बाद बनी हाशिम कबीले के प्रमुख बन गए थे।

उनका व्यक्तित्व और चरित्र

पैगंबर बनने से पहले, मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर), मजबूत नैतिक चरित्र के एक सरल और गुणी व्यक्ति थे । वह अशिक्षित थे और उन्होंने कभी मूर्तियों की पूजा नहीं की, जबकी मूर्ति पूजा करना उस समय लोगों की प्रथा थी।

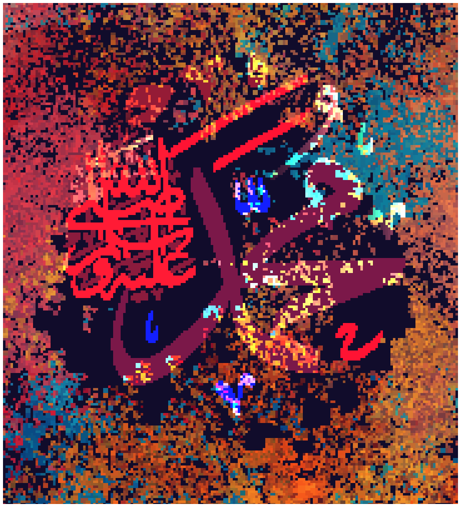

मुहम्मद, अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर

उन्हें 'सत्यवादी और विश्वसनीय' व्यक्ति (अरबी में *सादिकुल-अमीन*) के रूप में जाना जाता था, और वह बहुत ईमानदार थे । कई लोगों ने उन्हें व्यापार के लिए या सुरक्षित रखने के लिए अपने संपत्ति और धन सौंपा था।

पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) ने अपने लोगों की देखभाल के लिए, गरीबों और वंचितों की रक्षा और उनकी सहायता के लिए एक गठबंधन बनाया था।

अवतरण

पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उनपर) को मक्का के पास हीरा नाम की गुफा में देवदूत जिब्राइल के माध्यम से अल्लाह ने दिव्या कुरान के पहले श्लोक अवतरित किये थे:

> *पढ़ो! (सुनाओ! या घोषणा करो!) अपने ईश्वर का नाम लेकर जिसने हर (चीज़ को) पैदा किया । उस ने इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया पढ़ो! और तुम्हारा ईश्वर बड़ा उदार है । जिसने क़लम के ज़रिए ज्ञान दिया, उसीने मनुष्य को वह बातें बतायीं जिनको वह नहीं जानता था*
> *(पवित्र क़ुरान ९६: १-५)*

यह अवतरण ६१० ई में प्राप्त हुआ था जब पैगम्बर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर), ४० वर्ष के थे ।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह पहला अवतरण, ज्ञान और विश्वास की घोषणा के आधार के रूप में इंगित करता है, और वास्तव में, विश्वास का आधार है ।

पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) के जीवन के अगले २३ वर्षों तक देवदूत जिब्राइल के माध्यम से पवित्र क़ुरान के श्लोक अवतरित होते रहे है । पहले १३ वर्षों के दौरान पैगम्बर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) ने मक्का में इस्लाम के संदेश की घोषणा की, जहां उन्हें और उनके अनुयायियों को बहुत विरोध और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा । लेकिन ६२२ ई में, लगातार बढ़ते उत्पीड़न के कारण, पैगंबर और उनके अनुयायियों को मक्का के उत्तर में लगभग ४०० कि. मी दूर स्थित शहर मदीना में स्थानांतरित होन पड़ा था । शहर मदीना के लोगों ने सम्मान और उच्च उदारता के साथ उनका स्वागत किया और उनकी मेजबानी की । पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) ने अगले १० वर्षों तक मदीना में अल्लाह के संदेश को प्राप्त किया और उसकी घोषणा जारी रखा, और वहां उन्होंने इस्लामि राज्य का गठन किया ।

पैगंबर मुहम्मद का निधन

वर्ष ६३२ में, ६३ साल की उम्र में पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) की एक संक्षिप्त बीमारी के बाद मृत्यु हो गई और उन्हें मदीना में उनकी पत्नी आइशा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के घर में दफन कर दिया गया

इसलिए अल्लाह पर भरोसा रखो; आप (ऐ मुहम्मद) वास्तव में, स्पष्ट सच्चाई पर है (पवित्र क़ुरान २७:७९)

पैगंबर की प्रामाणिकता

मानव जाति के इतिहास में, ईश्वर के सभी नबियों की साख, प्रत्यायक पर हमेशा सवाल उठाया गया है और पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) कोई अपवाद नहीं हैं । पवित्र कुरआन हमें सूचित करता है कि ईश्वर के पैगंबरों की साख, प्रत्यायक उनके महान व्यक्तिगत चरित्र और संदेश की सम्मोहक सच्चाई में है जो वे अपने प्रभु से लाते हैं । पैगंबर मुहम्मद के संबंध में, उनकी प्रामाणिकता का समर्थन करने वाले चार तर्क हैं ।

पहला तर्क

जैसा कि हमने धारा ४ में देखा है, पैगंबर मुहम्मद बहुत ही उच्च निष्ठा के व्यक्ति थे और अपने लोगों में उनका बहुत सम्मान था । और उन्हें 'सत्यवादी और विश्वसनीय' जैसे उपनामो से भी जाना जाता था । पैगंबर मुहम्मद ने चालीस साल की उम्र में अपने पैगम्बरी लक्ष्य, प्रचार मिशन की शुरुआत की । यह सभी तर्क और उनकी कल्पना को नकारता है, क्यूंकि कि इस तरह के महान चरित्र के व्यक्ति अचानक इस अग्रिम उम्र में झूठे और एक धोखेबाज कैसे बन सकते हैं (अल्लाह की शरण) ।

को यह तर्क दे सकता है कि शायद वह अपनी सामाजिक स्थिति को बढ़ाना चाहते थे । लेकिन वह पहले से ही एक उच्च सम्मानित व्यक्ति थे जो मक्का में कुरैशी जनजाति के सबसे शक्तिशाली और सम्मानित कबीले से थे । वास्तव में, अपने पैगम्बरी मिशन की शुरुआत में, उन्हें इसका प्रचार प्रसार करने से रोकने के लिए अरब कबीलों का नेतृत्व सौपने की पेशकश की गई थी और उन्होंने सपाट रूप से मना कर दिया था।८ यह साबित करता है कि वह किसी भी सामाजिक स्थिति की चाह नहीं कर रहे थे ।

दूसरा तर्क

ईश्वर के दूत का समर्थन एक दिव्य संदेश द्वारा किया जाता था जो उनपर अवतरित होता था । पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) पवित्र कुरान द्वारा समर्थित थे । जैसा कि धारा ७ में दर्शाया गया है, कुरान पैगंबर द्वारा नहीं लिखा जा सकता था; क्यूंकि वह अशिक्षित थे यह निश्चित रूप से एक दिव्य अवतरण है । अगर किसी के पास कोई भी धारणा है की क़ुरान पैगंबर ने लिखी है तोह वास्तव में, मानवता को कुरान की खुली चुनौती है

कि वह इसके समान उत्पादन करें, इस तर्क से यह धरना भी गलत साबित हुई । आखिरकार, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पैगंबर एक शिक्षित व्यक्ति नहीं थे जो इस तरह की किताब लिख सकते थे । पवित्र कुरआन पैगंबर की प्रामाणिकता का एक जीवित प्रमाण है और वास्तव में, यह पैगंबर द्वारा दावा किया गया एकमात्र चमत्कार है ।९

तीसरा तर्क

पैगंबर मुहम्मद ने ऐसा आंदोलन शुरू किया, जिस ने, मानव सभ्यता को इतने व्यापक और तीव्र तरीके से बदल दिया और इतिहास में किसी भी अन्य आंदोलन की तुलना इस आंदोलन से नहीं की जा सकती । इसके अलावा, इस्लाम की तुलना में किसी और धर्म का मानव सभ्यता और विकास पर निरंतर प्रभाव नहीं था । मानव सभ्यता में सकारात्मक और निरंतर परिवर्तन एक ढोंगी द्वारा संचालित आंदोलन से प्राप्त नहीं किया जा सकता था । फिर, ऐसा विचार सभी कारण और तर्क को नकारता है ।

चौथा तर्क

पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह का अहीरवाद और शांति हो उनपर) सभी प्रमुख धर्मों जैसे यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के धर्मग्रंथों में पहले से ही बताया गया है ।

कुरआन में हमें सूचित किया गया है कि पैगंबर मुहम्म (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) के बारे में यहूदी और ईसाई, दोनों ही धर्मग्रंथों में भविष्यवाणी की गई है ।

> ***जो लोग पैगम्बर का पालन करते हैं, जो अशिक्षित पैगंबर हैं, जिन्हें वे अपने स्वयं के ग्रंथो में तोरा और इंजील में वर्णित पाते है***
> ***(पवित्र क़ुरान ७:१५७)***

डीयुटेरोनोमि (यहूदी धर्मग्रन्थ) १८:१८ में लिखा है:

> ***मैं मूसा की तरह ही, मूसा के भाइयों के बीच से एक पैगंबर भेजूंगा, और मेरे शब्दों को उनके मुंह में डाल दूंगा, और वह उन सभी से वही बात करेगा जो मैं उसे आज्ञा दूंगा ।***

मुहम्मद को छोड़कर, मूसा के बाद आनेवाला कोई पैगम्बर नहीं है जो इस वचन, शर्त पर पूरा उतरता हो: पहले, यहूदियों के भाई अरब हैं । इसराएल यहूदी इसहाक के वंसज है और अरबी लोग इस्माइल के वंसज है । इसहाक और इस्माइल, इब्राहीम के पुत्र हैं और इसलिए उनके वंशज आपस में भाई हैं ।दूसरे, मुहम्मद मूसा की तरह हैं, जबकि ईसा नहीं हैं: (i) मूसा और मुहम्मद दोनों के माता और पिता थे । ईसा की केवल माँ थी और पिता नहीं था । (ii) मूसा और मुहम्मद दोनों ही स्वाभाविक रूप से अपनी माताओं के गर्भ में थे । ईसा, एक चमत्कार के द्वारा अपनी माँ के गर्भ में धारण किये गए थे । (iii) मूसा और मुहम्मद ने शादी की और उनके बच्चे थे, जबकि ईसा ने शादी नहीं की थी । (iv) मूसा और मुहम्मद अपने लोगों के लिए नए कानून और नियम लाए, जबकि ईसा कोई कानून नहीं लाये थे । (v) मूसा और मुहम्मद दोनों की स्वाभाविक मृत्यु हुई । इस्लामि और ईसाई दोनों मान्यताओं में, ईसा ने इस धरती को प्राकृतिक तरीके से नहीं छोड़ा । तीसरा, जैसा कि हमें पवित्र क़ुरान (५३:३ -४) में सूचित किया गया है, पैगंबर मुहम्मद खुद से नहीं बोलते थे लेकिन उनके शब्द ईश्वर की प्रेरणा, अवतरण थे ।

न्यू टेस्टामेंट (ईसाई धर्मग्रंथ) में जॉन सुसमाचार में लिखा है:

> ***मेरे पास आपसे कहने के लिए अभी भी बहुत कुछ है, लेकिन आप उन्हें अभी सहन नहीं कर सकते । जब वह, जो सत्य की आत्मा है, आयेगा, वह आप सभी को सत्य का मार्गदर्शन करेगा: क्योंकि वह अपनी बात नहीं कहेगा, बल्कि जो भी वह सुनेगा, वही बोलेगा: और वह आने वाली चीजों के बारे में बताएगा । वह मेरा महिमामंडन करेगा, क्योंकि वह मेरी ओर से है कि वह वही प्राप्त करेगा जो वह आपको बताएगा । (जॉन १६:१२-१४)***

ये छंद, श्लोक 'सत्य की आत्मा' की बात करते हैं, जो स्वयं से नहीं बोलेंगे और यह सत्य आत्मा, पवित्र आत्मा नहीं हो सकती, क्योंकि पवित्र आत्मा पहले से ही यीशु के साथ थी (लूक ४:१ और ३:२२, जॉन २०:२२, एक्ट्स २:४, आदि) । इसके अलावा, सत्य की यह आत्मा ईसा की महिमा करेगी । पैगम्बर मुहम्मद के अलावा कोई पैगंबर नहीं आया है जो ईसा के बाद आया हो और ईसा की महिमा की हो, (धारा ११ देखें) । इसमें कोई संदेह नहीं है कि सत्य की आत्मा 'जो ईसा के बाद आने वाली थी वह पैगम्बर मुहम्मद ही हैं, उन सभी पर शांति हो ।

एशियाई भाग के इस्तांबुल शहर के मिनारो का क्षितिज

इसके अलावा, बाइबिल में पैगंबर मुहम्मद की भविष्यवाणी है जो इसाएयाह २९:१२, जॉन १४:१६, जॉन १६:७ , मैथ्यू २१:४३ और एक्ट्स ३:२२ में वर्णित है । ध्यान दें कि इन बाइबिल छंदों में वर्णित शब्द 'कॉम्फटर' ग्रीक शब्द 'पैरासेलेटोस' का अनुवाद है । यह शब्द मूल ग्रीक शब्द 'पेरिकिल्टोस' का एक बिगड़ा रूप है, इसका अनुवाद है जिसकी 'प्रशंसा की गई' या अरबी में, 'अहमद' या 'मुहम्मद' ।१०

निष्पक्ष और सावधानीपूर्वक अध्ययन से यह भी पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद का उल्लेख हिंदू के साथ-साथ बौद्ध धर्मग्रंथों में भी अग्रणी है । डॉ वेद प्रकाश उपाध्याय ने उनकी लिखी किताब "हिंदू धर्मग्रंथों में मुहम्मद" में पैगंबर के कई संदर्भों का उल्लेख किया है । हिन्दू ग्रन्थ वेद एक आने वाले ऋषि की बात करते हैं जिसका वर्णन पैगंबर मुहम्मद के लिए उपयुक्त बैठता है । पैगंबर मुहम्मद का वर्णन, जो मूल रूप से संस्कृत भाषा में है, वह यह हैं:

1. *नराशंस:* इसका अनुवाद है जिसकी 'प्रशंसा की गई' । पैगंबर के दोनों नामों, अहमद और मुहम्मद, का अर्थ भी यही है । इसके अलावा, नराशंस: के जन्म का स्थान और गुण पैगंबर मुहम्मद से मेल खाते हैं ।

2. *अंतरिम ऋषि* । पैगंबर मुहम्मद भी समक्ष मानव जाति के लिए अंतिम दूत थे ।

3. *कल्कि अवतार,* अर्थात ऋषि जो अंतिम पीढ़ी के लिए आएंगे । और पैगंबर मुहम्मद ही पूरी मानवता के लिए अंतिम दूत के रूप में भेजे गए थे ।

4. *कौरम,* जिसका अर्थ है एक उत्प्रवासी । पैगंबर मुहम्मद मदीना में एक उत्प्रवासी थे, (धारा ४ देखें) ।

5. उनके पिता का उल्लेख "वैष्णवेश" के रूप में किया गया है जिसका अर्थ है 'ईश्वर का दास' और उनकी माँ का नाम "सुमति" है जिसका अर्थ है 'शांति' । ये दो नाम अरबी में 'अब्दुल्ला' और 'आमना' के अनुरूप हैं, जो पैगंबर के पिता और माता के नाम हैं । ये दो नामों का अरबी अनुवाद 'अब्दुल्ला' और 'आमना' है जो पैगंबर के पिता और माता के नाम हैं ।

6. आने वाले ऋषि का नाम मामहा है। यह एक संस्कृत शब्द नहीं है, बल्कि ऐसे आभास होता है की यह अरबी नाम मुहम्मद का संस्कृत रूप है ।

बौद्ध धर्मग्रंथ में गौतम बुद्ध ने अंतिम बुद्ध या अंतिम ऋषि के आने की भविष्यवाणी दी थी, जिसका नाम मैत्रेय होगा । (कारुस द्वारा लिखित बुद्ध गॉस्पेल, पृष्ठ २१७) मैत्रेय का वर्णन पैगंबर मुहम्मद के वर्णन पर उपयुक्त बैठता है:

1. पैगंबर मुहम्मद अंतिम दूत, परम संत थे ।

2. मैत्रेय का अर्थ है 'दयालु' और पैगंबर मुहम्मद को पवित्र कुरआन (२१:१०७) में दुनिया के सभी लोगों के लिए 'दयालु' वर्णित है ।

3. मैत्रेय में बुद्ध की सभी विशेषताएं होंगी: वह एक सम्मानित परिवार से आएंगे, गुफा में ध्यान करेंगे और देवदूत उनसे मिलने आएंगी, उनके पत्नी और बच्चे होंगे, जीवन यापन के लिए काम करेंगे, और वह अपना सामान्य जीवन पूरा करेंगे, यानी उनका निधन स्वाभाविक होगा । यह सारा विवरण पैगंबर मोहम्मद पर उपयुक्त बैठता है ।

4. मैत्रेय शासक होगा । मुहम्मद साहब न केवल एक पैगंबर थे, बल्कि मुस्लिम राष्ट्र के शासक भी थे ।

5. मैत्रेय पिछले बुद्धों, ऋषियों की बात करेंगे । मुहम्मद ने पिछले दूतों के बारे में विस्तार से बात की थी । पवित्र कुरान में पैगंबर मुहम्मद से पहले आए चौबीस पैगंबरों, दूतों की कहानियों का उल्लेख है ।

6. मैत्रेय का दुनिया में कोई शिक्षक नहीं होगा । पैगंबर मुहम्मद अशिक्षित थे और उनका कोई शिक्षक नहीं था । उसका सारा ज्ञान ईश्वर की और से अवतरण के माध्यम से आया था ।

संक्षेप में, पैगंबर की वास्तविकता उनके महान चरित्र में है, उनके लाये हुए संदेशों में है, उनके द्वारा स्थापित आंदोलन से मानव सभ्यता का निरंतर परिवर्तन हुआ, और उनके आने की भविष्यवाणियाँ सभी प्रमुख धर्मों के धर्मग्रंथों में पाई जाती हैं ।

मदीना स्थित नबी की मस्जिद (मस्जिद अल-नबावी) । मस्जिद को पैगंबर ने ६२२ ईस्वी में बनाया था, मस्जिद की जगह उनके घर से सटी हुई थी । कई वर्षों के विस्तार के बाद, आज यह दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है, और मक्का में महान मस्जिद (मस्जिद अल-हरम) के बाद दूसरी सबसे पवित्र मस्जिद है।

पवित्र कुरान का इतिहास और संदेश

पवित्र कुरआन एक ऐसा ग्रंथ है जो अल्लाह द्वारा फ़रिश्ते जिब्राइल के माध्यम से पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) पर अवतरित किया गया । यह दुनिया के अंत तक सभी मानवता के लिए अल्लाह की तरफ से अंतिम पवित्र ग्रन्थ है । यह अल्लाह का सन्देश मानव जाती तक पूरा पूरा पहोचने के लिए अवतरित हुआ, और पिछले भेजे गए धार्मिक ग्रंथों की पुष्टि के लिए और पिछले शास्त्रों में किये गए मानव द्वारा परिवर्तनों को सही करेंने के लिए अवतरित हुआ।११

क़ुरान का अवतरण

क़ुरआन २३ वर्षों में, ६१० से ६३२ ई तक, कई चरणों में अरबी भाषा में अवतरित हुआ । पैगंबर पर हुए इस क्रमिक अवतरण ने विशिष्ट परिस्थितियों में विश्वासियों को प्रगतिशील मार्गदर्शन दिया । इसने विश्वासियों के जीवन में अल्लाह के कानूनों के प्रभावी आत्मसात और कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया।

क़ुरान का संकलन और संरक्षण

जैसे पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद) पे क़ुरान के श्लोक अवतरित होते, वह अपने निरिक्षण में, अपने चुने हुए लिपिकारों से उसे लिखवा लेते थे । उसी समय, पैगंबर और उनके कई साथि अवतरित श्लोक को याद कर लिया करते थे । इस तरह, कुरान को पैगंबर के जीवन काल में ही लिख लिया गया था और कई पुरुष और महिला विश्वासियों द्वारा याद भी किया गया था । इस्लाम के इतिहास में किसी भी समय, लाखों मुसलमान हैं जिन्होंने पूरे कुरान को मूल प्रतिशब्द याद है । आज यह अनुमान है की २० करोड़ मुसलमनो को पूरा क़ुरान याद है और कई लाख मुसलमनो को क़ुरान का कुछ हिस्सा याद है।

क़ुरान के तत्त्व और सामान्य विषय

कुरआन में ११४ अध्याय हैं । क़ुरान में प्रत्येक अध्याय में छंदों की संख्या भिन्न है, किसी अध्याय में ३ छंद (अध्याय १०३,१०८) तो किसी में २८६ छंद है (अध्याय २)। कुरआन मार्गदर्शन, चेतावनी और खुशखबरी की किताब है, साथ ही पिछले राष्ट्रों और उनके पैगंबरों का वर्णन है । सामान्य तौर पर, इसमें चार विषय शामिल हैं:

पहला, यह हमें अल्लाह के बारे में, उसका स्वभाव और विषेशताओं के बारे में बताता है। उदाहरण के लिए, हमने इस पुस्तक के खंड २ में अध्याय ११२ में अल्लाह की एकताई (*तौहीद*) और अनूठी विशेषताओं का वर्णन करते हुए देखा है जो किसी अन्य द्वारा साझा नहीं हैं। नीचे दिया गया छंद, जिसे 'सिंहासन का छंद' (अरबी भाषा में *आयतुल कुरसी*) के रूप में जाना जाता है, और इस में अल्लाह की विशेषताओं का वर्णन है;

अल्लाह: हमेशा बाकि रहने वाला, पूरे ब्रह्मांड का निर्वाहक; कोई ईश्वर नहीं है उसके सिवा। न उसको ऊंघ आती है और न ही नींद। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है। कौन है जो बगैर उसकी इजाज़त के उसके पास किसी की सिफ़ारिश करे सके। वो उसे भी जनता है जो लोगों के सामने है और उसे भी जो उन से छुपा है। लोग उसके ज्ञान में से किसी चीज़ को भी नहीं समझ सकते सिवाए उन बातों का ज्ञान जो खुद अल्लाह देना चाहे। उसकी (हुकूमत) की कुर्सी, सिंहासन ज़मीन और असमान को घेरे हुए है जिसकी सुरक्षा उसके लिए कठिन नहीं। वह अकेला, सर्वोच्च और ऊँचे मरतबा वाला है। (पवित्र क़ुरान २:२५५)

दूसरे, यह अल्लाह के साथ हमारे संबंधों का वर्णन करता है; क्यों उसने हमें बनाया है और हमारा उसके प्रति क्या कर्तव्य है । उदाहरण के लिए, अल्लाह पवित्र कुरान में कहता है (५१:५६):

मैंने इंसान और जिनो को केवल अपनी इबादत (भक्ति) के लिए बनाया है ।

यहाँ भक्ति का अर्थ है सृष्टिकर्ता की सेवा करना और उनकी आज्ञा के अनुसार जीवन व्यतीत करना । फिर पवित्र कुरआन ईश्वर की बाकी रचनाओं के साथ हमारे संबंधों का वर्णन करता है; जैसे फ़रिश्ते, जिन्नात, इंसान, जानवर, और बाकी भौतिक दुनिया; और हमारे अस्तित्व के साथ उनकी प्रासंगिकता और सहभागिता क्या है ।१२

तीसरा, यह कानूनों और निर्देशों के रूप में मार्गदर्शन देता है, नैतिकता और अच्छे जीवन स्तर को निर्धारित करता है: हमें किस तरह अल्लाह की इबादत करनी चाहिए और कैसे हमें अपने जीवन का आचरण करना चाहिए । यह उन लोगों के लिए अनन्त परमानंद का वादा करता है जो मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं और जो मार्गदर्शन को अस्वीकारते हैं उनके लिए अनन्त उत्पीड़ा हैं ।१३

अंत में: कुरआन हमें बताता है कि सभी राष्ट्रों के मार्गदर्शन के लिए नबि और पैगम्बर भेजे गए थे । उदाहरण के लिए, अल्लाह पवित्र कुरान में कहता है (१०: ४७),

हर युग के लोगों के लिए एक रसूल भेजा गया है फिर जब उनका रसूल (हमारे पास) आएगा तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म न किया जाएगा।

इस प्रकार, मानवता के लिए एक सबक के रूप में पिछले राष्ट्रों के साथ अल्लाह ने कैसा फैसला किया सब पवित्र कुरान में वर्णित है । उदाहरण के लिए, यह हमें पैगंबर नूह का अपने लोगों के साथ संघर्ष और उसके बाद आए बाढ़ के बारे में बताता है । यह हमें पैगंबर मूसा का अपने लोगो और फिरौन के साथ के संघर्ष के बारे में बताता है । फिर सबसे "अच्छी कहानी" पैगंबर युसूफ के जीवन के बारे में बताता है । कुल मिलाकर, कुरआन हजारों में से २५ पैगंबरों की कहानियां सुनाता है जो अल्लाह ने अलग अलग युग में मानव जाति के लिए भेजे थे ।१४

इस्लाम में कुरान को पढ़ना भी अल्लाह की इबादत है ।इस प्रकार, कुरआन आज दुनिया में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तक है ।

आधुनिक विज्ञान के साथ कुरान की सुसंगतता

चौदह शताब्दियों पहले कुरआन अवतरित हुआ था । फिर भी, इसमें हमें कई वैज्ञानिक तथ्य मिलते हैं जो आधुनिक विज्ञान ने हाल के दिनों में ही खोजे थे । ये तथ्य प्राकृतिक विज्ञानों, खगोल विज्ञान, भूविज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणीशास्त्र और अन्य तथ्य के बारे में बताते है । उदाहरण के लिए ।

ब्रह्मांड का निर्माण

कुरान (२१:३०) में, अल्लाह कहते है:

> *क्या अविश्वाशी लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों चिपके (बन्द) थे तो हमने दोनों को खोल दिया और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया I इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे?*

इसके अलावा, क़ुरान के अध्याय ५१ श्लोक ४७ में अल्लाह कहते हैं:

> *आकाश, हमने इसे अपनी शक्ति से बनाया है । निश्चित रूप से हम इसका विस्तार कर रहे हैं (या इसकी विशालता0020बढ़ा रहे हैं) ।*

ये छंद आधुनिक ज्ञान के अनुरूप हैं कि ब्रह्मांड एक गैसीय इकाई के रूप में शुरू हुआ, बाद में विस्फोट हुआ और आकाशगंगाओं का रूप लिया । इसे बिग बैंग थ्योरी (सिद्धांत) के रूप में जाना जाता है । इसके अलावा, आधुनिक विज्ञान यह पुष्टि करता है कि उस पहले विस्फोट के बाद से हमारा ब्रह्मांड का अभी भी विस्तार हो रहा है ।

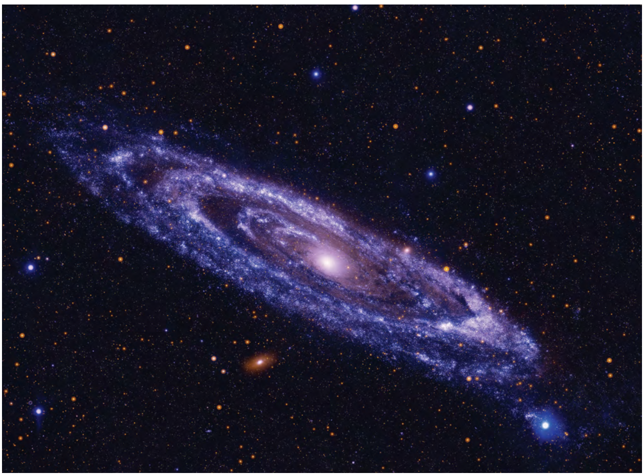

एंड्रोमेडा आकाशगंगा, अल्लाह के अरबों निर्माणित आकाशगंगाओं में से एक । इसकी खोज ९६४ ई में फारसी खगोलशास्त्री अब्द अल-रहमान अल-सूफी ने की थी ।

भ्रूण का विकास

भ्रूण के चरणों में बच्चे का विकास कुरान में कई स्थानों पर वर्णित है, उदाहरण के लिए;

> *और हमने पैदा किया है मनुष्य को गीली मिट्टी के सार से । फिर हमने उसे वीर्य बनाकर रख दिया एक सुरक्षित स्थान (गर्भाशय) में; फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुए रक्त में, फिर हमने उसे मांस का लोथड़ा बना दिया, फिर हमने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हमने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया । तो शुभ है अल्लाह, जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है । (कुरान २३:१२-१४)*

ये छंद अरबी शब्दों में सटीक रूप से, गर्भाशय में भ्रूण स्थापना से उसके विकास तक का सही वर्णन करते हैं । सबसे पहले, निषेचित डिंब, जमे रक्त के थक्के के रूप में विकसित होता है (अरबी में अलक़), और फिर यह एक गांठ, लोथड़ा का रूप ले लेता है (अरबी में मुदघाह) । उसके बाद, गांठ में हड्डियां विकसित होने लगती हैं और अंत में, हड्डियों के आसपास मांस बढ़ने लगता है । इस तरह से कुरान बच्चे के विकास का वर्णन करता है ।

कुरान के श्लोक में इस्तेमाल किए गए दो अरबी शब्द, *अलक़* और *मुदघाह* उनकी उनकी परिशुद्धता में बहुत महत्वपूर्ण हैं ।

रक्त के जमाव के अलावा, *अलक़* का अर्थ है कुछ ऐसा जो चिपकता है' जोंक जैसा पदार्थ' । यदि हम प्रारंभिक अवस्था में भ्रूण की जांच करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह गर्भाशय की दीवार से चिपकता है, यह तैरता नहीं है। और यह एक जोंक की तरह दिखता है । जोंक एक ऐसा प्राणी है जो त्वचा पर चिपक जाता है और इंसान या जानवर का खून चूस लेता है । नाल के माध्यम से भ्रूण को मां से रक्त की आपूर्ति भी हो जाती है ।

अलक़ फिर *मुदघाह* में विकसित होता है, जिसका अर्थ है 'मांस का चबाया हुआ लोथड़ा' । यदि हम अलक़ के बाद के चरण में भ्रूण की जांच करते हैं, तो हम पाते हैं कि यह दांतों के निशान के साथ एक चबाये हुए चुइंग गम जैसा दिखता है ।

यह ७ सदी में कुरान द्वारा दिए गए भ्रूण के विकास का एक अद्भुत सचित्र वर्णन है। और वैज्ञानिको ने १९ वें सदी में, इमेजिंग उपकरणों के आविष्कार के बाद ही, भ्रूण आकृतियों की पुष्टि कर पाए हैं।

कुरान में उल्लेखित एक और दिलचस्प बात यह है कि भ्रूण को तीन अंधकार के परदे द्वारा संरक्षित किया जाता है । कुरान ३९:६ की आयत में अल्लाह कहता है:

> *वह तुम्हे, तुम्हारी माताओं के गर्भ में, एक के बाद एक चरणों में, तीन अंधकार के पर्दों में बनाता है ।*

आधुनिक तकनीक के साथ, अब हम जानते हैं कि भ्रूण को पहले मां की पेट की दीवार, दूसरे गर्भाशय की दीवार, और तीसरे में एमिनो-कोरियोनिक झिल्ली द्वारा संरक्षित किया जाता है । ये वही तीन अंधकार वेक परदे हैं जिसके बारे में सटीकता से पवित्र क़ुरान में उल्लेख है ।

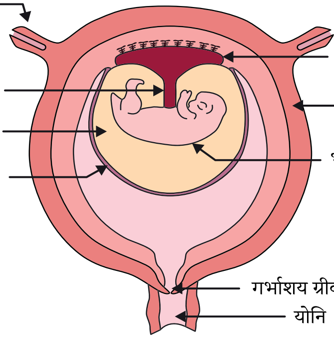

बाईं ओर की तस्वीर "मुदघाह" अवस्था में भ्रूण को दिखाती है जो चबाने वाली गम की तरह दिखता है । दाईं ओर की तस्वीर में भ्रूण गर्भ की दीवार से चिपकी हुई दिखाई देती है और तीन परतों द्वारा संरक्षित भी है ।

पहाड़ों के कार्य

हम पहाड़ों को पृथ्वी की सतह पर बहुत प्रभावशाली और मनोरम दृश्यों के रूप में देखते हैं । लेकिन वास्तव में, वे पृथ्वी की तेह की स्थिरता को बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । पृथ्वी की तेह के नीचे एक परत होती है, जो कम घनी होती है, बल्कि द्रवित होती है, इसलिए तेह को इसे स्थिर रखने के लिए कुछ चाहिए । वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि पृथ्वी की तेह को स्थिर रखने वाले पहाड़ ही हैं जिसके शिखर पृथ्वी की तेह के ऊपर और जेड पृथ्वी की तेह के नीचे । इस प्रकार, पहाड़ धरती के खूंटे की तरह काम करते हैं ।

अल्लाह कुरआन में कहता है (२१:३१):

> *और हम ही ने ज़मीन पर भारी पहाड़ बनाए ताकि ज़मीन लोगों को लेकर किसी तरफ झुक न पड़े।*

और अध्याय ७८ श्लोक ६-७ में अल्लाह कहता है:

> *क्या हमने ज़मीन को बिछौना और पहाड़ों को (ज़मीन) का खूंटा नहीं बनाया?*

पहाड़ों के कार्य पर ये क़ुरान की, आधुनिक विज्ञानं, पूरी तरह से पुस्टि करता है । यह विचार है कि पहाड़ों की जड़ें है १८६५ में वर्गीकृत की गई थीं और यह ज्ञान कि ये जड़ें पृथ्वी की परत को स्थिर करती हैं २०वीं शताब्दी के अंत में विकसित हुई है ।१५

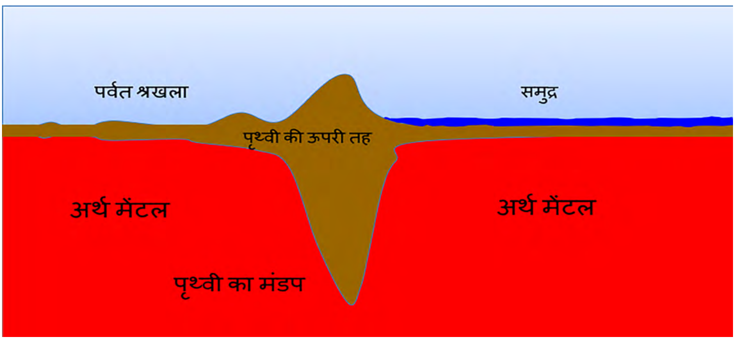

चित्र में पृथ्वी मंडप में एक गहरी जड़ के साथ पहाड़ को दिखाया गया है ।

जल जीवन है

यह सामान्य ज्ञान है कि पानी जीवन का स्रोत है, हालांकि, कुरान स्पष्ट रूप से इससे आगे बढ़के के यह बता है की वास्तव में हर जीवित चीज पानी से बनी है । ऊपर उद्धृत २१:३० आयात के अलावा, हम आयात २५:५४ में पढ़ते हैं,

> *और वही (अल्लाह) है जिसने पानी (मनी) से आदमी को पैदा किया फिर उसको ख़ानदान और सुसराल वाला बनाया और तुम्हारा ईश्वर सर्वशक्तिमान है ।*

यह अब एक अच्छी तरह से स्थापित तथ्य है कि एक जीवित कोशिका ८०% पानी से बना है और सभी जीवित जीवों में कम से कम ५०% पानी होता है । इसके अलावा, जैसा कि हम सभी जानते हैं, सभी जीवित चीजों को अपने अस्तित्व के लिए पानी की आवश्यकता होती है ।

जल ही जीवन है: बदलते वैश्विक मौसम का मिजाज और बारिश की कमी के परिणामस्वरूप दुनिया के कई हिस्सों में पशु और पौधों का जीवन बर्बाद हो रहा है ।

उपरोक्त वैज्ञानिक कथन कुरान में १४०० वर्ष पहले सामने आए थे जब लोग खगोल विज्ञान, भौतिकी या जीव विज्ञान के बारे में बहुत कम जानते थे । वे आधुनिक विज्ञान के साथ पूरी तरह से सहमत हैं, हालांकि उनमें से कई क़ुरान के आयात की पुष्टि वैज्ञानिक ज्ञान में प्रगति के बाद ही पिछली शताब्दी में हुई हैं ।१६

कुरान की प्रामाणिकता

क्या वास्तव में क़ुरान ईश्वर ही की तरफ से एक अवतरण है? यह एक जायज़ सवाल है क्योंकि आज दुनिया में कई ऐसे धर्मग्रंथ हैं जो एक-दूसरे का खंडन करते हैं और फिर भी ये सभी ईश्वर से होने का दावा करते हैं । इस प्रश्न के विस्तार के रूप में कुछ लोग पूछ सकते हैं: हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि कुरान को युगों में नहीं बदला गया है?

इन सवालों के जवाब कुरआन में ही मौजूद सच्चाई के तीन मानदंड से मिलते हैं ।

पहला मानदंड

ईश्वर से एक सच्चा अवतरण पूरी तरह से सुसंगत है और किसी भी विरोधाभासों से मुक्त है । अल्लाह कुरआन (४:८२) में कहता है:

> *तो क्या ये लोग क़ुरान में भी विचार नहीं करते और (ये नहीं ख़्याल करते कि) अगर ईश्वर के सिवा किसी और की तरफ़ से (आया) होता तो ज़रूर उसमें बड़ा अंतर और असहमति पाते ।*

कोई भी शास्त्र जिसमें विरोधाभास या गलती है, वह ईश्वर से नहीं हो सकता । कुरआन किसी भी असहमति या विरोधाभासों से मुक्त है । यह इस बात की भी पुष्टि करता है कि यह किसी भी मानव द्वारा युगों से नहीं बदला गया है । कुरान के कुछ आलोचकों द्वारा विरोधाभास हवाला दिया जाता है, उसका कारन उनकी कुरान की अरबी भाषा के सही ज्ञान का आभाव और वह प्रसंग जिसमें विशेष श्लोक का अवतरण हुआ उसके ज्ञान की कमी है ।

दूसरा मानदंड

ईश्वर से एक सच्चा अवतरण, मानव क्षमता को व्यापक रूप से कानून, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के साथ-साथ तर्क की सूझ, वक्तृत्व और शैली के बल पर मानवीय जरूरतों को पूरा करने में, पार कर जाता है । इस संबंध में, अल्लाह ने मानवता को कुरान के समान एक दूसरी पुस्तक का भी उत्पादन करने के लिए चुनौती दी है । श्लोक २:२३-२४ में, अल्लाह अविश्वासियों को चुनौती देता है:

और अगर तुम लोग इस क़ुरान से जो हमने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर अवतरित किया है संदेह में पड़े हो तो अगर तुम सच्चे हो तो तुम (भी) एक सूरा, श्लोक बना लाओ और ईश्वर के सिवा जो भी तुम्हारे सहयोगी हों उनको भी बुला लो बस अगर तुम ये नहीं कर सकते हो और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह अविश्वासियों के लिए तैयार की गई है ।

इसी चुनौती को अल्लाह १७:८८ में दोहराता है :

कह दो कि अगर सारी दुनिया के आदमी और जिन इस बात पर एकत्र हो कि उस क़ुरान जैसा दूसरा बनालाये तो वे इसके समान नहीं ला सकते भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करें ।

यह केवल सर्वज्ञ निर्माता है जो इस चुनौती का सामना कर सकता है । कोई भी इंसान एक किताब लिखने के बाद यह दावा नहीं कर सकता है कि कोई मनुष्य अभी या भविष्य में इसके लिखी किताब के सामान किताब लिखने में सक्षम नहीं है । इसके अलावा, अगर कुरआन को इंसानों ने बदल दिया होता, तो लोग उसकी तरह दिखने वाली किताब तैयार कर सकते थे । पवित्र क़ुरान की यह चुनौती आज भी वैसी ही खड़ी है जैसी पिछले १४०० वर्षों से थी ।

तीसरा मानदंड

परमेश्वर की तरफ से आये अवतरण को समय की चुनौतियों का सामना करना और प्रासंगिक रहना चाहिए क्यूंकि मानव ज्ञान बढ़ता है और मानव की ज़रूरतें बदलती और विकसित होती हैं । क़ुरान के क़ानून और न्याय के सिद्धांत, अर्थशास्त्र, सामाजिक व्यवस्था और नैतिक मूल्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि १४०० वर्ष पहले थे जब क़ुरान अवतरित हुआ था । इसके अलावा, जैसा कि धारा ६ में दिखाया गया है, कुरान प्राकृतिक विज्ञानं में आधुनिक ज्ञान के सभी पहलुओं के साथ पूरी तरह से अनुकूल है ।

यदि कुरआन ईश्वर के अलावा से आया होता होता या उसे बदल दिया गया होता, तो उसकी प्रासंगिकता युगों में आपत्ति में पड़ जाती । कुरआन मानव ज्ञान और आवश्यकताओं के सभी पहलुओं में हमेशा के लिए प्रासंगिक है ।

ये मानदंड, और इसके साथ कुरान में शेष अवतरण, सभी मानवीय आवश्यकताओं और मार्गदर्शन पर गहन और दूरगामी प्रभाव डालते हैं, और कुरान की चमत्कारी प्रकृति को प्रमाणित और प्रदर्शित करते हैं । क़ुरान वास्तव में, पैगंबर मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उन पर हो) द्वारा दावा किया गया एकमात्र चमत्कार है, हालाँकि उन्होंने अपने मिशन के दौरान अल्लाह की इच्छा से कई अन्य चमत्कार किए ।

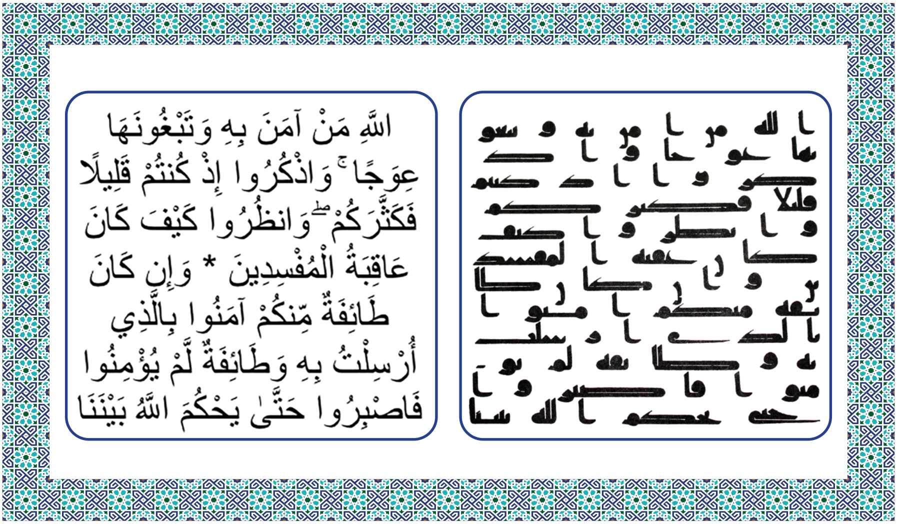

(बाएं) से क़ुरान के अध्याय ७ के श्लोक ८६-८७ की मूल लिपि और (दाएं) से बाद में लिखने गए श्लोक । पैगंबर के समय के दौरान, अरबी लेखन में बहुत ही मूल प्रतीकों का समावेश होता था जिसमें कोई स्वर या वर्णनात्मक चिह्न नहीं होता (अरबी में ताशकिल और इजम) था । जैसे-जैसे इस्लाम गैर-अरबी भाषी लोगों में फैलता गया, कुरान को ग़लत पढ़ने का ढंग और उच्चारण स्पष्ट होने लगे । इस खतरे का मुकाबला करने के लिए पैगंबर की मृत्यु के लगभग छह दशक बाद क़ुरान में स्वर और विशेषांक पेश किए गए थे ।

पैगंबर की रवायतें

पैगंबर की रवायतें (अरबी भाषा में *सुन्नत* या *सुन्नाह*) पैगंबर के उपदेश और जीवन उदाहरण हैं जो दैवीय रूप से प्रेरित हैं (क़ुरान ५३:३) और उसके साथियों द्वारा प्रेषित किया गया । वे कुरान से अलग हैं, और वे कुरान के बाद इस्लामी शिक्षाओं के दूसरे प्राथमिक स्रोत हैं ।

कुरआन के विपरीत, जो पैगंबर के जीवनकाल के दौरान ही अवतरित, दर्ज और संकलित हुआ था, पैगम्बर की रवायतों को उनकी मृत्यु के बाद संकलित किया गया ६३२ ई । पैगंबर की मृत्यु के तुरंत बाद ही उनकी रवायतों को दर्ज करना शुरू करदिया गया था लेकिन ८ वीं शताब्दी के मध्य तक उनका संकलन शुरू हुआ और ९ वीं शताब्दी तक फला-फूला । इस प्रकार, उदाहरण के लिए, मसनद अर-रबी 'बिन हबीब ८ वीं शताब्दी के अंत में संकलित किया गया था । और साहिह अल बुखारी और साहिह मुस्लिम ९ वीं शताब्दी में संकलित किए गए थे ।

जैसा पैगम्बर की रवायतें समय के साथ साथ लोगों की एक श्रृंखला द्वारा सुनाई और प्रसारित की जानी लगी, रवायतों को प्रमाणित करने के लिए एक विस्तृत पद्धति की कार्यप्रणाली की भी खोज हुई । कार्यप्रणाली ने कथाकारों की श्रृंखला की छानबीन की, रवायतों के तत्वों की छानबीन की और वह संदर्भ जिसमें विशेष रवायतों के होने की सूचना दी गई थी । इस पद्धति के माध्यम से, रवायतों को प्रामाणिकता की कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया । प्रमाणीकरण की यह पद्धति (अरबी में *इसनद*) का उपयोग आज भी जाली रवायतों को निर्धारित करने के लिए किया जाता है जिसका सर्पण मूल संग्रह में हो सकता है ।

पैगंबर की रवायतें इस्लामी मार्गदर्शन और उसके कानूनोंके निर्माण में निम्नलिखित भूमिका को पूरा करती हैं:

1. कुरआन की आयात के उद्देश्यों को स्पष्ट करती है करें और उनके अर्थों पर विस्तृत चर्चा करती है ।

2. वे कुरान के बाद इस्लामी कानून के गठन का दूसरा प्राथमिक स्रोत हैं; और इस्लामी नियम के सम्बन्ध में, रवायतों के हिसाब से किस की अनुमति है और क्या वर्जित है इसको कुरआन के समान दर्जा प्राप्त है I

3. कुरानिक निषेधाज्ञा को मजबूती से लागू करता है, और इसके अधिकारों की गवाही भी देता है I

4. कुरआन में बताए गए इबादत के तरीकों के बारे में विस्तार से बताता है ।

5. कुरान में निहित नैतिक मूल्यों के अनुप्रयोग के बारे में समझता और उद्धरण के माध्यम से बताता है ।

पैगंबर की रवायतों के तीन उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

अबू उबैदा ने बयान कि जाबिर बिन ज़ैद ने इब्न अब्बास से सुना (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ) कि पैगंबर, (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर) ने कहा; "जो कोई भी हमें ठगता है, वह हम मेसे नहीं, और जो कोई भी बच्चो के लिए कोई दया नहीं दिखाता है और बुजुर्गों के लिए कोई सम्मान नहीं रखता वह हम मेसे नहीं" ।

(मुसनद अर-रबी 'बिन हबीब, हदीस नंबर ५८२)

अबू अल-मिनहाल ने कहा, "मैंने अल-बरा बिन अज़ीब और ज़ैद बिन अर्कम से धन के आदान प्रदान के बारे में पूछा । उन्होंने उत्तर दिया, हम अल्लाह के नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) के समय में व्यापारी थे, और हमने उनसे धन विनिमय के बारे में पूछा । उन्होंने जवाब दिया, 'अगर यह एक हाथ से लेना और एक हाथ से देना हो तो इसमें कोई बुराई नहीं है, अन्यथा यह स्वीकार्य नहीं है ।

(सही अल बुखारी, बिक्री और व्यापार की पुस्तक, हदीस संख्या २७६)

अबू हुरैरा ने कहा कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) ने फ़रमाया है एक महिला की शादी तब तक नहीं होनी चाहिए जब तक कि उसकी सलाह न ली जाए और एक कुंवारी लड़की की शादी तब तक नहीं होनी चाहिए जब तक उसकी अनुमति नहीं लेली जाती । उन्होंने अल्लाह के पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) से पूछा कि, उसकी (कुंवारी की) सहमति कैसे प्राप्त की जाए? 'उन्होंने कहा, 'उसका चुप रहना'

(सही मुस्लिम, विवाह की पुस्तक, पुस्तक ००8, संख्या ३३०३)

पैगंबर की कई रवायतों में से ये कुछ उदाहरण हैं जो कानून के बारे में विस्तार से बताते हैं और सामाजिक मानदंडों पर मार्गदर्शन देते हैं ।

मृत्यु के बाद का जीवन

मृत्यु अनिवार्य है और इसलिए सबको परवर्ती जीवन की वास्तविकता का सामना करना है । कोई इसे पूरी तरह से नकार सकता है, यानी इस धारणा को सत्य मनाता है कि मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं है और दूसरे इसे अनदेखा कर सकता है और सर्वश्रेष्ठ पाने की आशा कर सकता है लेकिन दोनों ही स्थिति में लोग की धरना एक शक्तिशाली जुआ पे दांव लगाने जैसा है क्योंकि जीवन का अर्थ है अनन्त अस्तित्व, जो बहुत गंभीर मामला है । सबसे समझदारी वाली बात यह है कि इसके बारे में पूर्वानुमान करना और इसके बारे में कुछ करना है । हमारे अनन्त अस्तित्व के लिए हमारी तैयारी असल में यही धर्म है ।

मृत्यु के बाद का जीवन का प्रमाण

धर्म में विश्वास के अलावा, कारण और सहजबुद्धी के माध्यम से जीवन के बाद की वास्तविकता का अनुमान लगाया जा सकता है । निम्नलिखित तर्कों पर विचार करें:

पहला तर्क: ईश्वर की रचनाओं में से मनुष्य के पास बुद्धि, तर्क की शक्ति और इच्छाशक्ति की स्वतंत्रता है । जो मनुष्य को आध्यात्मिक, भौतिक और भौतिक क्षमता प्रदान करती है । ये विशेषताएं इसे अन्य सभी निर्माणों से सर्वश्रेष्ठ बनती हैं । ये विशेषताएं इसे अन्य सभी निर्माणों से सर्वश्रेष्ठ बनती है । इस कारण से, आदम के निर्माण के बाद देवदूतों को, आदम के इस महान क्षमता की मान्यता में सजदा करने की आज्ञा दी थी।१७ इस प्रकार, मनुष्य ने ब्रह्मांड की गहराई की जांच की है, वास्तविक समय में दुनिया भर में संचार कर सकता है, आनुवंशिक रूप से संशोधित भोजन का उत्पादन कर सकता है, कृत्रिम बुद्धि का आविष्कार किया है और जैसे मानव ज्ञान का विस्तार और विकास होगा भविष्य में ऐसे बहुत से कारनामे निर्मित होंगे । अब, **मनुष्य** नाम की यह महान रचना किसी दिव्य उद्देश्य और किसी दिव्य योजना के बिना नहीं बनाई गयी है; हम जीते हैं और हम मर जाते हैं और बस यही है । यह वास्तव वही धरना है जो पुराने दौर के लोगों का अनुमान था और कुरआन हमें सूचित करता है:

> ***वे कहते हैं, "वह तो बस हमारा सांसारिक जीवन ही है । यहीं हम मरते और जीते हैं । हमें तो बस काल (समय) ही विनष्ट करता है । सत्य यह के, उनके पास इसका कोई ज्ञान नहीं । वे तो बस अटकलें ही लगाते हैं । (क़ुरान ४५:२४)***

दरअसल, यह धारणा कि मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं है, केवल एक अनुमान है!!

दूसरा तर्क: ब्रह्मांड की प्रत्येक व्यवस्था परमेश्वर के बोध और विधान की परम उत्कृष्टता की ओर इंगित करती है। मनुष्य सदैव इस संसार में अधिक संतोषजनक जीवन की आकांक्षा के साथ जीता है, एक ऐसा जीवन जो रोग-रहित हो और अमरत्व से परिपूर्ण हो; कोई भी रोग, दरिद्रता या मृत्यु की कामना नहीं करता। यह मानवीय आकांक्षा इस भौतिक संसार में हमारे अस्तित्व की नश्वरता और अपूर्णता को दर्शाती है। मनुष्य ऐसी किसी वस्तु या व्यवस्था की कामना नहीं कर सकता जो अस्तित्व में ही न हो, इसलिए जिस पूर्णता की मनुष्य अभिलाषा करता है, उसका अस्तित्व अवश्य होना चाहिए। इस परम-पूर्णता वास्तव में पारलौकिक जीवन में ही प्राप्त होगी, जहाँ ईश्वरीय सृष्टि की परम-पूर्णता साकार होगी। इस संसार में हमारा अस्तित्व, जो अपूर्ण और अस्थायी प्रकृति का है, हमें उस अगले जीवन के लिए तैयार करने हेतु निमित्त है जो शाश्वत और पूर्ण है, और यही हमारी सृष्टि की ईश्वरीय योजना है।

तीसरा तर्क: मनुष्य को पसंद, इच्छा की स्वतंत्रता के साथ बनाया गया है; हम में से कुछ धर्मीक हो सकते हैं और कुछ दुष्ट और कपटी हो सकते हैं । दुष्टों ने साथी मनुष्यों पर बहुत अधिक कष्ट किये है और विभिन्न कारणों से इन्साफ की पकड़ से दूर रहे; जैसे उनका शक्तिशैली और प्रभावशैली होना, मानव कानूनों में कमजोरियां, कानूनी प्रणालियों में भ्रष्टाचार, इत्यादि । और कुछ लोग इतनी तीव्र अपराध करते हैं जिसे कोई भी मानवीय न्याय कभी दंडित नहीं कर सकता है । उदाहरण के लिए एक व्यक्ति ने एक लाख लोगों की अन्यायपूर्ण हत्या की; ऐसे व्यक्ति को वास्तव में किस प्रकार की सजा दी जा सकती है । इस दुनिया में अंतिम न्याय कभी पूरा नहीं हो सकता । सच्चे न्याय के लिए हमारी आशा यहाँ के जीवन के बाद ही पूरी हो सकती है । वास्तव में, यह पूरी तरह से अन्यायपूर्ण होगा अगर यहाँ के बाद का जीवन ना हो ।

चौथा तर्क: जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, मनुष्य को वास्तविकता की प्राकृतिक मान्यता (अरबी में फ़ितरा) के साथ बनाया गया है। इस प्रकार, हम पाते हैं कि पूरे मानव इतिहास में अधिकांश मानव जाति पुनर्जन्म में विश्वास करती है। उदाहरण के लिए , प्राचीन सभ्यताओं के ऐतिहासिक रिकॉर्ड बताते हैं कि लोगों ने अपने आप को अपनी मृत्यु के बाद

एक निरंतर अस्तित्व के बदलावके लिए तैयार किया। उन्होंने पूर्णतः अच्छी तरह से पहचाना कि मृत्यु एक अलग ही तरह की, दूसरी नई दुनिया में आत्मा के अस्तित्व के पुनरारंभ की ओर ले जाती है।

पांचवा तर्क: कुरान विस्तृत करता है: (i) प्राकृतिक विज्ञानों में कई घटनाएं (धारा ६ देखें), (ii) ऐतिहासिक घटनाएं, (iii) कानून और नैतिक मानकों ने सकारात्मक रूप से मानव सभ्यता में बदलाव और इनका मानवता पर गहरा प्रभाव आज तक जारी है । आज तक इनमें से कोई भी विवरण गलत या अमान्य साबित नहीं हुआ है । कुरान द्वारा स्थापित सत्यता और वैधता को ध्यान में रखते हुए, कोई भी व्यक्ति की जीवन के बाद के वास्तविकता पर सवाल क्यों उठाएगा जो कुरान इतने सशक्त रूप से बताता है?

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर किसी को भी यह विश्वास होना चाहिए कि मौत के बाद का जीवन केवल एक वास्तविकता नहीं है, बल्कि एक आवश्यकता है । इसके अलावा, ऐसे कौन से तर्क हैं जो इसके गैर-अस्तित्व का या न होने का सुझाव देते हैं?

मौत के बाद वाले जीवन के बारे में इस्लामी शिक्षा

मानव आत्मा अपने शाश्वत अस्तित्व में विभिन्न चरणोंसे गुजरती है । इस पृथ्वी पर हमारा जीवन हमारे अस्तित्व के अगले चरणों की तैयारी है । मृत्यु हमारे अस्तित्व के अगले चरण की शुरुआत है जो मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच मध्यवर्ती स्थिति है । इस चरण को अरबी में बरज़ख कहा जाता है । यह कब्र की वह अवधि है जिसमें एक पूरी आध्यात्मिक चेतना के साथ अस्तित्व दूसरे चरण में जागता है । जो लोग इस सांसारिक जीवन में मृत्यु के बाद जीवन के लिए तैयार हैं, वे आगे आनेवाले सुख और संतोष की संभावना के कारण आनंद और राहत का अनुभव करेंगे । जो लोग जीवन की इस वास्तविकता को नजरअंदाज करते हैं, वे उन आसन्न आपदाओं की वजह से भारी पश्चाताप झेलेंगे जो उन पर चल रही होगी । कुरआन हमें सूचित करता है कि मृत्यु के क्षण में, इन दोनो विरोधी स्थिति की घोषणा, आत्मा को फ़रिश्ते, स्वर्गदूत द्वारा की जाती हैं:

जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है" फिर इसपर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उनपर फ़रिश्ते, स्वर्गदूत उतरते हैं कि "न डरो और न शोकाकुल हो, और उस जन्नत

की शुभ सूचना लो जिसका तुमसे वादा किया गया है । (पवित्र क़ुरान ४१:३०)

क्या ही अच्छा होता कि तुम देखते जब फ़रिश्ते इनकारकरनेवालों के प्राण ग्रस्त करते हैं; वे उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं कि 'लो अब जलने की यातना का मज़ा चखो' I (क़ुरान ८:५०)

कब्र की अवधि के बाद जीवन का पहला चरण है जो हमारी पसंद के परिणामों को इंगित करता है जो हमने अपने सांसारिक जीवन में किए हैं । पैगम्बर मुहम्मद (अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो उन पर) ने कहा है "कब्र अगले जीवन के पहले चरणों में से एक है । यदि कोई इस से सुरक्षित रूप से गुजरता है, तो इसके बाद के चरण आसान हैं । लेकिन, अगर कोई इस पहले चरण में विफल रहता है, तो इसके बाद का चरण अधिक गंभीर है" I

आत्मा इस मध्यवर्ती अवस्था में अंत समय तक रहेगी जब तक इस भौतिक निर्माण का अस्तित्व एक नए नई दुनिया में बदल जाएगा । यह एक महत्वपूर्ण घटना है जिसे कुरान में ज्वलंत शब्दों में वर्णित किया गया है । उदाहरण के लिए, (२२:१-२) में, हम पढ़ते हैं;

ऐ लोगो! अपने ईश्वर का डर रखो! निश्चय ही क़ियामत, प्रलय की घड़ी का भूकम्प बड़ा भयानक है । जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि प्रत्येक दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भभार रख देगी । और लोगों को तुम नशे में देखोगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह की यातना बड़ी विकत, दर्दनाक है

समय का अंत, नई दुनिया की शुरुआत है जो मृतकों के पुनरुत्थान के साथ शुरू होगी और पूरे मानव जाति को फिर से दुबारा पैदा किया जाएगा । कुरान इस दिन को वास्तव में अविश्वासियों के लिए एक बहुत ही मुश्किल दिन के रूप में वर्णित करता है जो पृथ्वी पर जीवन के दूसरे अवसर की याचना करेंगे ताकि वे अपने गलती और तरीकों में सुधार कर सकें । विश्वासियों के लिए इस दिन डरने का कोई करान नहीं होगा ।१८

फिर अंतिम निर्णय के लिए मानवता को इकट्ठा किया जाएगा । यह न्याय का दिन है जो इतना महत्वपूर्ण है कि कुरआन कई शब्दों में इसका वर्णन करता है; पश्चात्ताप का दिन (१९:३९), विजय का दिन (३२:२९), आपद्ग्रस्त दिन (७६:१०), एक भारी दिन (७६:२७) हिसाब

का दिन (३८:१६, ४०:२७) इत्यादि । न्याय का दिन वह दिन है जब हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व का हमारे ईश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा । यह धर्मी लोगों के लिए बहुत खुशी और खुशी की उम्मीदों का दिन है और ईश्वर और अंतिम दिन के इंकार करने वालों के लिए पछतावा और विलाप का दिन है । इन दो स्थितियों का कुरान के निम्नलिखित श्लोक में अभिव्यक्त किया गया है:

ऐ मनुष्य! तू परिश्रम करता हुआ अपने रब ही की ओर खिंचा चला जा रहा है और अन्ततः उससे मिलने वाला है । फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, तो उससे आसान, हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की तरफ ख़ुश-ख़ुश जायेगा । और वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र उसकी पीठ के पीछे से दिया गया, तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा, और दहकती आग में जा पड़ेगा । वह अपने लोगों में मग्न था, उसने यह समझ रखा था कि उसे कभी अपने (ईश्वर की तरफ) पलटना नहीं है । क़ुरान (८४:६-१४)

इस्लाम हमें सिखाता है कि इसके दुनिया के जीवन के बाद धर्मी लोग अपने परिवार के धर्मी सदस्यों के साथ एकजुट होंगे; १९ स्वर्ग में हमारे माता-पिता, भाइयों और बहनों, हमारे बच्चों, हमारे दोस्तों से मिलना कितना आनंदमय होगा । लेकिन दुष्टों के लिए, यह पूरी तरह से एक निषिद्ध परिदृश्य होगा; वे चाह रहे होंगे की उनका कभी अस्तित्व ही न रहा हो:

“हमने तुम्हें निकट आनेवाली यातना से सावधान कर दिया है । जिस दिन मनुष्य देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा होगा, और इनकार करनेवाला कहेगा, ‘ऐ काश! कि मैं मिट्टी होता’ (कुरआन ७८:४०)

ओमान स्थित सुल्तान कबूस ग्रैंड मस्जिद, के कालीन

अन्य धर्मों पर इस्लामी दृष्टिकोण

मनुष्यों की सृष्टि अपने निर्माता के प्राकृतिक पहचान और जन्मजात बुनियादी नैतिक मूल्यों (अरबी भाषा में फ़ित्रा) के साथ हुई है । मानव इतिहास साक्षी है ईश्वर ने मानव जाति में इस प्राकृतिक आदर्श को जगाने के लिए सभी राष्ट्रों के लिए नबियों, पैगम्बरों को भेजा है । इन सभी पैगंबरों को ईश्वर का संदेश हमेशा मूल पंथ में एक सा रहा है - दैवीय एकता, मौत के बाद के जीवन का विश्वास और धार्मिकता, भलेही कानून और इबादत (भक्ति) पूजा के नियम और रूप विविध हैं । २० अल्लाह कुरान (४२:१३) में कहता है;

> *उसने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित किया जिसका हुक्म उसने नूह को किया था । और वह (जीवन्त आदेश) जिसकी प्रकाशना हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है और वह जिसका हुक्म हमने इबराहीम और मूसा और ईसा को कीया था यह है कि "धर्म को क़ायम करो और उसके विषय में अलग-अलग न हो जाओ" I बहुदेववादियों को वह चीज़ बहुत अप्रिय है, जिसकी ओरतुम उन्हें बुलाते हो । अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है और अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर पलटता है ।*

मानव द्वारा मूल संदेशों से क्रमिक विचलन के परिणाम स्वरूप समय के साथ पंथ और धर्म में विविधता उभरी है । कुरान में अल्लाह मानवता को इब्राहीम के मूल पंथ में लौटने के लिए कह रहा है जो विश्वास में एक सच्चे एकेश्वरवादी थे और मानव इतिहास में ईश्वर द्वारा भेजे गए सभी दूतों के पूर्वज थे । इसलिए, इस्लामी दृष्टिकोण से, सभी भिन्न धर्म दो श्रेणियों में आते हैं ।

१ एकेश्वरवादी धर्म

यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म पैगंबर अब्राहम (शांति हो उन पर) के एकेश्वरवादी परंपराओं को साझा करते हैं, उनके शुद्ध रूप में, इन तीनों धर्मों में विश्वास और धर्म के मूल सिद्धांत समान हैं ।

यहूदियों और ईसाइयों को क़ुरान की कई आयतों में "किताब के लोग" कहा जाता है।२१ इसका मतलब है कि यह वे लोग हैं जो दिव्य धर्मग्रंथों से संबंधित हैं, अर्थात् तोराह और इंजील । हालाँकि, अपने वर्तमान रूप में ये दो धर्मग्रंथ अपने-अपने पैगम्बरों, मूसा और ईसा (शांति हो उन पर) के मूलरूप संदेशों से बदल गए हैं।२२ इसके फलस्वरूप, इस्लाम धर्म, यहूदी और ईसाई धर्म को, उन धर्मों के रूप में देखता है जो मूसा और ईसा (शांति हो उन पर) की सच्ची शिक्षाओं के अनुरूप नहीं हैं ।

कुरान न केवल मूसा और ईसा (उन पर शांति हो) के संदेशों की पुष्टि करने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रकट किया गया था, बल्कि उनके संदेशों में से विचलन को ठीक करने के लिए भी।२३ इस कारण से, इस्लामिक दृष्टिकोण से, मूसा और ईसा (उन पर शांति हो) के संदेशों के सच्चे अनुयायी, वास्तव में कुरआन का पालन करने वाले ही हैं ।

२ अन्य धर्म

यहूदी और ईसाई धर्म के अलावा अन्य धर्मों के संबंध में, जैसे की हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और अन्य, इस्लाम उन्हें उन धर्मों के रूप में देखता है जो पारंपरिक दूतों के संदेशों से दूर हैं और इस तरह इब्राहीमी परंपराओं से जुड़े नहीं हैं । इनमें से कुछ धर्म नास्तिकता की ओर झुकाव रखते हैं, और अन्य लोग पथभ्रष्ट होकर एक सच्चे ईश्वर, अल्लाह की भक्ति में कई और को भी साथ जोड़कर, अर्चना करते है । अन्य देवताओं को, एक और अकेले, सच्चे ईश्वर के साथ जोड़ना ईश्वरीय एकता के सिद्धांत के विपरीत है, (धारा ३ देखें)

इन सभी मतभेदों के बावजूद, इस्लाम सभी धर्मों के साथ-साथ उन लोगों का भी सम्मान करता है जो इन धर्मों का पालन करते हैं, क्योंकि अल्लाह वह है जिसने मानव जाति का निर्माण किया और हमें आस्था के मामलों में पसंद और इच्छा की स्वतंत्रता दी । अल्लाह क़ुरान (१०:९९) में कहता है;

> ***यदि तुम्हारा रब चाहता तो धरती में जितने लोग हैं वे सब के सब ईमान ले आते, फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वे मोमिन हो जाएँ?***

यह दूसरे श्लोक (२:२५६) में भी दोहराया गया है:

धर्म में कोई बाध्यता, जबरदस्ती नहीं: सत्य झूट से अलग होकर स्पष्ट है ।

इस प्रकार, आस्था में विविधता मानव जाति के निर्माण में अल्लाह की योजना के अंतरगत है ।२४ इस मान्यता के साथ, पूरे इतिहास में मुस्लिम अन्य धर्मों के लोगों के साथ शांति, प्रेम, सद्भावना और सद्भाव से रहते हैं । यह वास्तव में उल्लेखनीय है कि इस्लाम मानवता की गरिमा की रक्षा करता है और आस्था के मामलों में मानवता की समानता और इच्छाशक्ति की स्वतंत्रता के आधार पर नैतिक मूल्यों को लागू करता है ।

मक्का की वार्षिक तीर्थयात्रा में सभी देशों के ३० लाख से अधिक लोग एक ईश्वर, अल्लाह की इबादत के लिए एक स्थान पर आते हैं । यह धर्म की एकता और मानवता की एकता का एक व्यावहारिक प्रदर्शन और सुदृढ़ीकरण है ।

इस्लाम में इशू का स्थान

अल्लाह द्वारा भेजे गए सभी दूतों पर विश्वास करना इस्लाम में आस्था के सिद्धांतों में से एक है । मुसलमानों का मानना है कि इशू (शांति हो उन पर) अल्लाह के महानतम नबियों, दूतों में से एक है ।

इशू (शांति हो उन पर) के जीवन और शिक्षाओं को, उनके जाने के दशकों बाद, बाइबल में दर्शाया गया था, इस प्रकार वे रहस्य से घिरा हुआ है । कुरान, जिसमें ईसा (शांति हो उन पर) का पच्चीस बार उल्लेख किया गया है, उनके व्यक्तित्व और शिक्षाओं के आसपास के रहस्य और अंधविश्वासों को स्पष्ट करने के लिए आया था, ईसा और उनकी माँ (शांति हो उन दोनों पर) को लेकर किये गए झूठे दावों को खंडित किया और उन्हें और उनकी माँ को अल्लाह के सच्चे और धर्मनिष्ठ सेवक के रूप में सम्मानित किया । इस प्रकार, कुरान हमें सिखाता है कि:

- ईसा (शांति हो उन पर) उनकी माँ कुंवारी मरियम की चमत्कारिक गर्भाधान के बाद पैदा हुए थे । तदनुसार, ईसा (शांति हो उन पर), के कोई पिता नहीं थे इस प्रकार, उनके पास कोई पिता की तरफ से वंशावली नहीं थी, बल्कि एक महान मातृ वंशावली थी, क्योंकि मरियम पैगंबर के परिवार से आई थी । हालाँकि, उनकी चमत्कारी गर्भाधान के बावजूद, वह पूरी तरह से मानव थे और, जैसा कि कुरआन ने हमें सूचित किया, उन्होंने कभी भी अल्लाह द्वारा नबी के रूप में नियुक्त किए गए इंसान से अधिक होने का दावा नहीं किया ।२५ उदाहरण के लिए, कुरान ५:११६ -११७ में, अल्लाह निर्णय, इन्साफ के दिन के एक दृश्य का वर्णन करता है:

  और याद करो जब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त दो और पूज्य, मुझे और मेरी माँ को बना लो?" वह कहेगा, "महिमावान है तू! मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं यह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई हक़ नहीं है । यदि मैंने यह कहा होता तो तुझे मालूम ही होता । तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है । परन्तु मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है । निश्चय ही, तू छिपी बातों का भली-भाँति जाननेवाला है । मैंने उनसे उसके सिवा और कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे आदेश दिया था, यह कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है । और जब तक मैं उनमें रहा उनकी ख़बर रखता था, फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो फिर तू ही उनका निरीक्षक था । और तू ही हर चीज़ का साक्षी है ।

बाइबल में ही इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि ईसा (उनपर पर शांति हो), विनम्र थे, परमेश्वर के प्रति अपनी दृढ़ता का दावा करते थे और कभी भी दिव्यता का दावा नहीं किया ।२६

- वह मसीह थे,जिसका अर्थ है कि वह एक नबी के रूप मेंअल्लाह द्वारा अभिषिक्त या नियुक्त किये गए थे। २७
- उन्होंने अल्लाह की अनुमति से चमत्कार किए, लेकिन पहला चमत्कार यह था कि उन्होंने अपनी माँ मरियम की रक्षा के लिए शिशु अवस्था में बात की, जिसे कुंवारी जन्म के कारण अभद्रता के आरोपों का सामना करना पड़ा था । बाद में जीवन में उन्होंने अल्लाह की अनुमति से कई अन्य चमत्कार किए, जैसे कि मृतकों को ज़िंदा और अंधे और कोढ़ियों को ठीक करना ।२८
- उन्हें गॉस्पेल या इवेंजेल किताब (अरबी में अल-इंजेल) के साथ भेजा गया था ।२९ उदाहरण के लिए, कुरान ५:४६ में अल्लाह कहते हैं:

और पूर्ववर्ती पैगंबर के बाद उन्हीं के पद-चिन्हों पर हमने मरयम के बेटे ईसा को भेजा जो पहले से उनके सामने मौजूद किताब 'तौरात' की पुष्टि करनेवाला था । और हमने उसे इनजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था । और वह अपनी पूर्ववर्ती किताब तौरात की पुष्टि करनेवाली थी, और वह डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत थी ।

- उन्हें केवल इसराईल की संतान, यहूदियों के लिए दूत बनाकर भेजा गया था, किसी अन्य राष्ट्र के लिए नहीं । अल्लाह कुरान ३:४९ में कहता है,

"और (इशू को) इसराईल की संतान की ओर रसूल बनाकर भेजा...."

यह तथ्य कि ईसा (शांति हो उन पर), केवल इसराईल की संतान के लिए भेजे गए थे आज की बाइबिल के सभी विभिन्न संस्करणों में भी परिलक्षित है।३०

- उन्हें न तो मारा गया और न ही सूली पर चढ़ाया गया । अल्लाह कुरान में कहता है ४:१५७–१५८:

और उनके इस कथन के कारण कि हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल, को क़त्ल कर डाला, हालाँकि न तो इन्होंने उसे क़त्ल

किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध हो गया । और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में सन्देह में थे । अटकल पर चलने के अतिरिक्त उनके पास कोई ज्ञान न था । निश्चय ही उन्होंने उसे (ईसा को) क़त्ल नहीं किया, बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया । और अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है ।

ईसा (उनपर पर शांति हो) को सूली पर चढ़ाने के लिए उनके दुश्मनों द्वारा प्रयास किया गया था, लेकिन अल्लाह ने अपने नबी को अपमानित नहीं होने दिया: उसने अपने नबी की रक्षा की और उन्हें बचा लिया ।

यरूशलम में अल-अक्सा मस्जिद, इस्लाम में तीसरी सबसे पवित्र मस्जिद । जैसा कुरान (१७:१ और ५३: १३-१८) में वर्णन है, पैगंबर मुहम्मद, (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो), जो इस मस्जिद से वर्ष ६२१ ईस्वी में स्वर्ग की तरफ चले थे।

इस्लाम के अलावा दूसरे धरम क्यों सही नहीं ?

एक गलत धारणा है कि कोई भी धर्म जो लोगों के बीच सद्भाव, और प्रेम को बढ़ावा देता है, अनिवार्य रूप से ईश्वर और ईश्वरत्व की ओर जाता है और इसलिए, ऐसा कोई भी धर्म स्वीकार्य है । दूसरे शब्दों में, सभी धर्म अनिवार्य रूप से अच्छे हैं, और बराबर हैं, इसलिए, किसी को किसी विशेष धर्म का पालन करने की आवश्यकता नहीं है । यह सोच या धरना दो महत्वपूर्ण कारणों से दोषपूर्ण और त्रुटिपूर्ण है ।

पहला, धर्म जग निर्माता, अल्लाह के प्रति हमारी भक्ति के बारे में है । धर्म इस बारे में है कि हम ईश्वर से कैसे संबंधित हैं, हम उसकी इबादत (पूजा) कैसे करते हैं और हम उसकी इच्छा के अनुसार इस पृथ्वी पर अपना जीवन कैसे व्यतीत करते हैं । ये सभी सवाल हमारे निर्माता से आने चाहिए । इसलिए, सही और सही धर्म निर्माता द्वारा निर्धारित होना चाहिए ।

दूसरा, यह कहना कि आज के समय में मौजूद सभी धर्म निर्माता द्वारा है और हमारे लिए सही है, यह ग़लत है, क्योंकि आज विभिन्न धर्मों में सैद्धांतिक और व्यावहारिक विरोधाभास हैं । उदाहरण के लिए: उनके अनुयायियों द्वारा पालन की जाने वाले सभी धर्म निर्माता की एकेश्वरवादी गन और विशेषता को लेकर सहमत नहीं हैं, दूसरे, मोक्ष के सिद्धांतों पर धर्मों के बीच बड़े मतभेद हैं, और तीसरा, धर्मों में इस बात को लेकर मतभेद हैं कि जायज क्या है और गैरकानूनी क्या है ।

निश्चित रूप से निर्माता खुद का विरोध नहीं करता । इसलिए उसका धर्म पूरी मानवता के लिए सुसंगत होना चाहिए - अपनी बुनियादी मान्यताओं और प्रथाओं के अनुरूप, सामान होना चाहिए । यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह ज्ञान और तर्क के माध्यम से सत्य की तलाश करे । मानव धोखे में नहीं रहे कि सभी धर्म अनिवार्य रूप से अच्छे हैं और इसलिए निर्माता को स्वीकार्य हैं; उसके लिए स्वीकार्य एकमात्र धर्म उसका धर्म है ।

इस्लाम कोई नया नहीं है; यह वही धर्म है जो मानवता के पहले की सभी पीढ़ियों के लिए प्रकट किया गया था । पैगंबरों के मूल संदेशों से विचलन के कारण मानव इतिहास में धर्मों

की विविधता उभरी । अंतिम संदेशवाहक, मुहम्मद और अंतिम संदेश, कुरान, मूल संदेश के प्रति मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए आया था । इस प्रकार, निर्माता के लिए स्वीकार्य एकमात्र धर्म वह है जो इस अंतिम संदेश के अनुरूप है - इस्लाम, जिसका अर्थ है उसकी इच्छा के अनुसार जीवन को व्यतीत करना । इस प्रकार, अल्लाह कुरआन ३:८५ में कहता है,

> *जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और धर्म की इच्छा करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा । और यहाँ के बाद वाले जीवन में वह घाटा उठानेवालों में से होगा ।*

इस्लाम ईश्वर के सभी दूतों का धर्म था, पैगम्बर मोहम्मद से पहले आनेवाले संदेशवाहक इब्राहिम , मूसा और ईसा (शांति उन सभी पर हो) सहित सभी का धर्म इस्लाम ही था क्योंकि वे निर्माता के अधीन थे और पूरीतरह से उनकी इच्छा अनुसार कार्य करते थे । इस्लाम पूर्ववर्ती नबियों के ईमानदार अनुयायियों का भी धर्म था, जिन्होंने अपने-अपने नबियों की सच्ची शिक्षाओं का पालन किया।

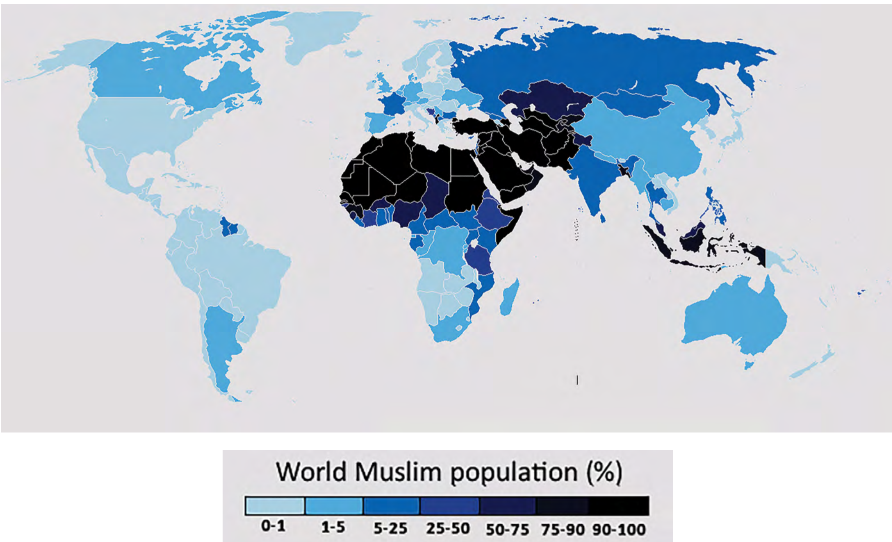

नास्तिकता और अज्ञेयवाद पर फिटकार

नास्तिकता ईश्वर का खंडन है, और मौत के बाद के जीवन के इनकार का भी अर्थ है । अज्ञेयवाद को ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह है । नास्तिक और अज्ञेय दोनों ही विभिन्न कारणों को अपने इनकार या संदेह का आधार बनाते हैं । पुराने समय में यह कारण ईश्वर की उपस्थिति को शारीरिक रूप से देखने या महसूस करने में हमारी अक्षमता के बारे में थे या दुख के मानवीय अनुभव के बारे में; अगर ईश्वर है तो हमें तकलीफ क्यों होती है । आधुनिक समय में कारण अधिक परिष्कृत होते हैं; ईश्वर के अस्तित्व को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध क्यों नहीं किया जा सकता है? इसके अलावा, चूंकि हम वैज्ञानिक रूप से निर्माण में कई घटनाओं की व्याख्या कर सकते हैं, भगवान के अस्तित्व का कोई आधार नहीं है ।

इस्लाम ईश्वर के अस्तित्व पर मानवीय विवेक, बुद्धि को अपील करके इस अस्वीकृति या संशय को संबोधित करता है । सृष्टिकर्ता और सृष्टि की प्रकृति असीम रूप से भिन्न हैं इस लिए मनुष्य में ईश्वर को देखने की क्षमता नहीं है । इसके अलावा, अगर ईश्वर के पास एक भौतिक रूप है जिसे हम देख सकते हैं, तो वह अंतरिक्ष, समय और पदार्थ में सीमित या विवश होता । यह एक बेतुका प्रस्ताव है, क्योंकि अंतरिक्ष, समय और पदार्थ निर्मित चीजें हैं और इसलिए, वे निर्माता को सीमित नहीं कर सकते हैं । कुरआन इसके बजाय लोगों को सृजन की बौद्धिक जाँच के लिए आमंत्रित करता है ताकि वे ईश्वर को उसकी रचना के माध्यम से समझ सकें । ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणों को कुरान में 'संकेत' (अरबी भाषा में आयत) कहा जाता है, और कुरआन में इन के सैकड़ों संकेत हैं । अध्याय ४१, श्लोक ५३ में अल्लाह कहता है:

> *हम अपनी (क़ुदरत) की निशानियाँ क्षितिज पर और ख़ुद उनमें भी दिखा देगें यहाँ तक कि उनके लिए स्पष्ट हो जायेगा कि यक़ीनन यह सत्य है I क्या यह पर्याप्त नहीं है कि आपका परवरदिगार हर चीज पर क़ाबू रखता है?*

इस प्रकार, इस वादे के साथ, कुरान मानव जाति को ईश्वर के अस्तित्व के कई सबूतों पर उसकी रचना के माध्यम से विचार करने के लिए आमंत्रित करता है । उदाहरण के लिए, कुरान (३:१९०) में अल्लाह कहता है;

निस्सन्देह आकाशों और धरती की रचना में और रात और दिन के आगे-पीछे बारी-बारी आने में उन बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं ।

वास्तव में, आकाश और पृथ्वी के निर्माण में वैज्ञानिकों ने आश्चर्यजनक तथ्य खोजे हैं; उदाहरण (i) ब्रह्मांड की एक शुरुआत थी, यानी यह कुछ भी नहीं से शुरू हुआ था, (ii) ब्रह्मांड सटीक और परस्पर भौतिक नियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार विकसित हुआ, (iii) २०० से अधिक मापदंड हैं जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाते हैं, उदाहरण के लिए, पृथ्वी और सूर्य के बीच की दूरी, पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण खीचाव, वायुमंडलीय संरचना, पानी का अस्तित्व, और इत्यादि ।

एक और श्लोक में अल्लाह कहता है;

वही है जिसने आकाश से तुम्हारे लिए पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उसी से पेड़ और वनस्पतियाँ भी उगती हैं, जिनमें तुम जानवरों को चराते हो । और उसी से वह तुम्हारे लिए खेतियाँ उगाता है और ज़ैतून, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल पैदा करता है । निश्चय ही सोच-विचार करनेवालों के लिए इसमें एक निशानी है । (क़ुरान १६:१०-११)

इस आयत में ईश्वर के अस्तित्व के कई संकेतों का उल्लेख किया गया है । बस एक तत्व को ही बात करें जैसे, बारिश का गठन: इसमें सैकड़ों भौतिक कानून और सटीक मानदंड शामिल हैं: पृथ्वी से नमी का वाष्पीकरण, आकाश में नमी का उभार, बूंदों में नमी का संघनन, बूंदों का बादलों में जमा होना, हजारों टन पानी से लदे बादलों की आवाजाही, और बारिश के रूप में बूंदों का धरती पर गिरना । इन सभी प्रक्रियाओं को सटीक भौतिक कानूनों और मापदंडों द्वारा नियंत्रित किया जाता है । कुरआन हमें सृजन, निर्माण के इन हजारों संकेतों पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है । एक उचित सोच वाले इंसान के लिए यह सब एक सर्वोच्च नक्शानवीस और निर्माता, ईश्वर, की ओर इशारा करता है । यह मानना अनुचित है कि यह सभी बुद्धिमान बनावट, जटिलता और निर्माण में सटीकता और इसके सभी गहन

गतिशीलता याद्दच्छिक मौका का एक परिणाम है या यह अचानक हुआ है । वास्तव में, कई महान आधुनिक वैज्ञानिक इसी तार्किक निष्कर्ष पर आए हैं ।३१

कुरआन हमें यह भी सूचित करता है कि सभी मनुष्यों को सृष्टिकर्ता को पहचानने और उसकी इच्छा पूरी करने के एक प्राकृतिक स्वभाव के साथ बनाया गया है (अरबी भाषा में इस फितरत कहते है) ।३२ इसका प्रमाण यह है कि जब हम एक गंभीर संकट का सामना करते हैं और महसूस करते हैं कि कोई भी इंसान अब हमारी मदद नहीं कर सकता है, तब हम मदद के लिए ईश्वर की ओर नज़र करते हैं । हमारे निर्माता ने दूतों को नियुक्त किया है और उसे पहचानने के इस विवेक को जगाने के लिए धर्मग्रंथ भी भेजा । क्योंकि ईश्वर ने हमें इच्छाशक्ति की स्वतंत्रता दी है, हम उसे पहचानने के इस प्राकृतिक स्वभाव को अनदेखा करने की क्षमता रखते हैं । लेकिन ईश्वर हमें कुरान में बताता है कि जो लोग उसे विश्वास करने के लिए आंतरिक चेतना का साथ दिए, ईश्वर उनका मार्गदर्शन करेगा, और जिन लोगों ने उस पर विश्वास करने के खिलाफ अपनी अंतरात्मा को अनदेखा किया, वह उन्हें भटका देगा, और यह हमारे निर्माण की ईश्वर की योजना है ।३३

कुरान, जो मानव जाति के लिए भेजा गया अंतिम अवतरण है, अपने आप में ईश्वर के अस्तित्व का संकेत है । हम कुरान के अध्याय ४ श्लोक ८२ में पढ़ते हैं;

> ***क्या वे क़ुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी असहमति की बातें पाते।***

कुरआन का एक उद्देश्य और खुला अध्ययन स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यह आदमी द्वारा नहीं लिखा जा सकता, (धारा ७ देखें)। कुरआन ईश्वर के अस्तित्व का एक शक्तिशाली प्रमाण है ।

ईश्वर ने हमें एक अनन्त दिव्य उद्देश्य के लिए बनाया और उनकी अधिकांश रचनाओं के अधिक हम पर उपकार किया ।३४ इस पृथ्वी पर हमारा जीवन अस्थाई है और इसका

अर्थ हमें इसके बाद के अनंत काल के लिए तैयार करना है । इस तैयारी में, ईश्वर से हमारा विश्वास की परीक्षा, खुशहाली और आपदा के माध्यम से ली जाएगी । इसके अलावा, हमारी यह भी परीक्षण होगी कि हम अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग कैसे करते हैं, और यह हमारी स्वतंत्र इच्छा के परिणामस्वरूप अच्छाई या बुराई हमारे जीवन को छूएंगे; यह मनुष्य ही है जो बुराई करता और उसका प्रचार प्रसार करता है ईश्वर नहीं । बुराई और पीड़ा न केवल हमारे विश्वास की परीक्षा हैं, बल्कि वे मनुष्य के लिए एक चेतावनी और एक निंदा भी हैं । यह अक्सर प्रतिकूल परिस्थितियों में होता है कि सकारात्मक चिंतन और उच्च उद्देश्य की तलाश हमारे अंतरात्मा में जागृत होती है ।

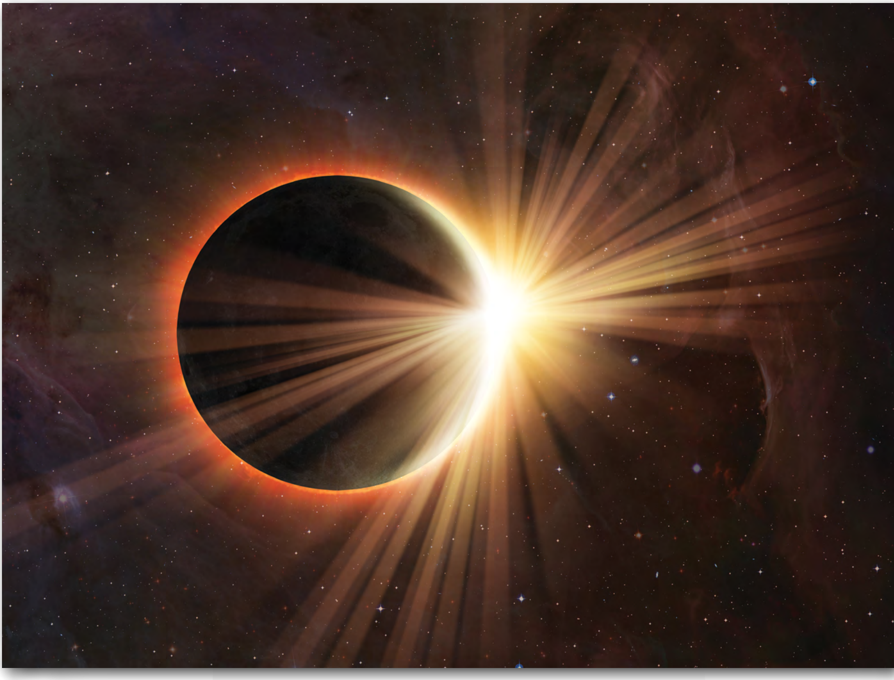

सूर्य का ग्रहण: यह शानदार घटना केवल इसलिए संभव है क्योंकि सूर्य चंद्रमा की तुलना में पृथ्वी से चार सौ गुना आगे है और चंद्रमा से भी चार सौ गुना बड़ा है । ये सटीक अनुपात एक बेहतरीन नक्शाकार, ईश्वर, को इंगित करते हैं जिन्होंने इस सुंदर दृश्य को बनाया है ।

इस्लाम में महिलाओं का स्थान

इस्लाम द्रढ़ता से पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान इंसान के रूप में देखता है । पुरुष और महिला जैविक रूप से भिन्न होते हैं - लेकिन परस्पर निर्भर - भूमिकाएँ परिवार और समाज में निभाते है । हालांकि, कोई एक दूसरे से बेहतर है । कुरआन (४:१) से निम्नलिखित श्लोक इस सिद्धांत को खूबसूरती से प्रस्तुत करता है:

> *हे मनुष्यों! अपने उस पालनहार से डरो, जिसने तुम्हें एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया तथा उसीसे उसकी पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया और उन दोनों से बहुत-से नर-नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो, जिसके द्वारा तुम एक-दूसरे से (अधिकार) मांगते हो तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो । निःसंदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है ।*

यह श्लोक कहता है कि महिलाएं पुरुषों के लिए प्रकृति की तरह हैं, दोनों के पास पारस्परिक अधिकार हैं, और अल्लाह विशेष रूप से हमारी माताओं के लिए विशेष श्रद्धा और सम्मान के लिए कहता है ।

इस नेक सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए, ७ वी शताब्दी में इस्लाम ने महिलाओं को पुरुष प्रधान समाज में मात्र नौकर के दर्जे से मुक्त कर पुरुषों के साथ आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक समानता का दर्जा दिया ।३५

इस प्रकार, इस्लाम में महिलाओं को संपत्ति का अधिकार है, उत्तराधिकार का हक़ है, शिक्षा का अधिकार है, स्वयं के जीवन यापन का अधिकार और पुरुषों द्वारा प्राप्त अन्य सभी अधिकार प्राप्त हैं ।

कुछ मुस्लिम समाजों में महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय इस्लाम द्वारा निर्धारित नहीं हैं, वास्तव में वे सांस्कृतिक प्रथाएं है जो इस्लाम की शिक्षा के खिलाफ है । उदाहरण के लिए, जबरदस्ती विवाह करना या लड़कियों को शिक्षा से वंचित करना, दोनों कुछ मुस्लिम समाजों में प्रचलित हैं, लेकिन वे इस्लामी कानून के तहत अवैध हैं ।

धार्मिक अतिवाद और हिंसा

धार्मिक अतिवाद और हिंसा ऐसी घटनाएं हैं जो दुनिया के सभी धर्मों में मौजूद हैं और वे उतने ही पुराने हैं जितने धर्म खुद हैं । सभी धर्मों में हमेशा कुछ ऐसे लोग होंगे जो अपने चरमपंथी और अक्सर विकृत विचार रखते हैं । ऐसे लोगों के चरमपंथी विचारधाराओं और दिमाग के कट्टरपंथीकरण के कारण बहुत से युद्ध लड़े गए और लोगों पर अत्याचार किए गए । इस मानव प्रवृत्ति को रोकने के लिए, इस्लाम आस्था, मानव स्वतंत्रता की मर्यादा, मानवीय सम्मान की रक्षा, सभी धर्मों के प्रति सम्मान, जीवन की पवित्रता, न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों पर मानवीय चरित्र का निर्माण करता है ।

सभी आस्थाओं के लिए इच्छा और सम्मान की स्वतंत्रता

अल्लाह ने इंसान को आस्था के मामलों में विवेक और इच्छाशक्ति के साथ पैदा किया, और इस तरह किसी भी धर्म में आस्था किसी पर भी थोपा नहीं जा सकता । पहले से उद्धृत किए गए कुरआन के श्लोक २:२५६ और १०:९९ के अलावा (धारा १० देखें) अल्लाह क़ुरान में कहता है (११:११८-११९),

> *और यदि आपका पालनहार चाहता, तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता और वे सदा विचार विरोधी रहेंगे । परन्तु जिसपर आपका पालनहार दया करे और इसीके लिए उन्हें पैदा किया है ।*

आस्था में विविधता हमारे निर्माण की ईश्वर की योजना के अंतर्गत है और इसका मतलब सभी धर्मों के लोगों के साथ, सह-अस्तित्व और सहिष्णुता से रहे ।

जीवन की पवित्रता

इस्लाम निर्दोषों की हत्या की निंदा करता है और किसी भी अन्य प्रकार की हिंसा या अन्याय की भी निंदा करता है । इस्लाम में किसी भी बेगुनाह व्यक्ति को मारना घोर पाप है । अल्लाह कहता है:

> *जिसने भी किसी प्राणी की हत्या की, किसी प्राणी का ख़ून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना, तो समझो उसने पूरे मनुष्यों की हत्या कर दी और*

जिसने जीवित रखा एक प्राणी को, तो वास्तव में, उसने जीवित रखा सभी मनुष्यों को (क़ुरान ५:३२)

इस्लाम में युद्ध केवल आत्मरक्षा और किसी भी प्रकार की आक्रामकता या उत्पीड़न के खिलाफ करने की अनुमति है ।३६ हालाँकि, इस तरह के युद्ध का आह्वान उन लोगों के खिलाफ घोषित किया जाएगा जो आक्रामकता में लगे हुए हों न की निर्दोष नागरिकों और उनकी संपत्ति पर । इसके अलावा, युद्ध के लिए आह्वान एक वैध राज्य द्वारा किया जा सकता है, न कि व्यक्तियों या समूहों द्वारा । इस्लाम में युद्ध बहुत सख्त नियमों द्वारा शासित है इस में कैदियों, निर्दोष और गुणों, संपत्ति से कैसे निपटा जाना है इसका निर्देश है ।३७

न्याय और निष्पक्षता

न्याय और निष्पक्षता की कमी चरम और हिंसक विचारधारा को जन्म देती है । इस्लाम सभी धर्म के लोगों के साथ न्याय और निष्पक्षता का आदेश देता है । अल्लाह कुरआन की आयत (६०:८) में कहता है,

अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता उनसे, जिन्होंने तुमसे युध्द न किया हो धर्म के विषय में और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा, तम्हारे देश से, इससे कि तुम उनसे अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उनसे । वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्यायकारियों से ।

इन सिद्धांतों के साथ, इस्लाम में चरमपंथ और हिंसा केवल इस्लामी सिद्धांतों में अज्ञानता, धर्म में अत्यधिक उत्साह या धर्म के अलावा प्रेरणा के कारण हो सकती है। आज हम दुनिया में जो हिंसा देख रहे हैं, वह मूल रूप से राजनीति से प्रेरित है और इसका धर्म या धार्मिक संप्रदायों से कोई लेना-देना नहीं है, हालांकि धर्म का नाम अंतर्निहित उद्देश्यों को पूरा करने और लोकप्रिय समर्थन जुटाने के लिए उपयोग किया जाता है । इन संघर्षों और हिंसा के परिणाम शक्ति संघर्ष, राजनीती, वर्चस्व, धन, लालच, प्रतिशोध और विदेशी सैन्य हस्तक्षेप हैं । इस्लाम का, आज दुनिया में धर्म के नाम पर चल रहे, युद्ध और अन्याय से कोई सरोकार नहीं हैं ।

इस्लामि जिहाद

‘जिहाद’’ एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है कुछ हासिल करने के लिए ‘संघर्ष या प्रयास’ करना । इस्लामी संदर्भ में इसका अर्थ है 'अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करना' अर्थात् ईश्वर की सेवा में प्रयास करना । कुरान में कई आयतें है जो विश्वासियों को अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करने का आह्वान करती है । उदाहरण के लिए, क़ुरान में (५:३५) में हम पढ़ते हैं;

हे ईमान वालो ! अल्लाह (की अवज्ञा) से डरते रहो और उसकी ओर वसीला खोजो तथा उसकी राह में जिहाद करो, ताकी तुम सफल हो जाओ ।

इसलिए, एक विश्वासी की हर क्रिया जो अल्लाह की खुशी के इरादे से की जाती है, वह है जिहाद; इसमें भक्ति, दान, हमारी इच्छाओं को नियंत्रित करना, सही ज्ञान का हासिल करना, जीवन यापन के साधन अर्जित करना, हमारे परिवार का पालन-पोषण करना, जो अच्छा है उसके बारे में बताना और जो बुरा है, उसकी मनाही करना, आदि शामिल हैं ।

इतिहास की किताबों के साथ-साथ आधुनिक मीडिया में भी *'जिहाद'* शब्द का उल्लेख अक्सर लड़ाई या हिंसा के संबंध में किया जाता है । यह गलत है क्योंकि अरबी में लड़ना को क़िताल कहते है न कि जिहाद । इस्लाम पर आरोप है कि उसे जिहाद के नाम पर तलवार से फैलाया गया । यह इतिहास की किताबों में दोहराया गया सबसे शानदार झूट है: इस्लाम अपने उदात्त सिद्धांतों और मूल्यों द्वारा दुनिया भर में फैला है, तलवार से नहीं; कही कभी भी इस्लामि धर्मयुद्ध नहीं हुआ । शब्द 'पवित्र युद्ध' इस्लामी शब्दावली में मौजूद नहीं है । इसका आव्हान १०९५ में पोप अर्बन II ने किया था, जब उन्होंने यूरोप में सभी ईसाइयों को मुस्लिमों के खिलाफ "पवित्र युद्ध" में शामिल होने के लिए पवित्र भूमि को पुनः प्राप्त करने के लिए कहा । हालाँकि, मुसलमानों ने प्रारंभिक इस्लामी इतिहास में युद्धों किया था, लेकिन वह युद्ध आक्रामकता को पीछे हटाना या अत्याचार को दूर करना और आस्था के मामलों में विवेक और स्वतंत्रता की स्थापना करना था; वे वास्तव में मुक्ति के युद्ध थे, न कि रूपांतरण के युद्ध। उदाहरण के लिए, मुसलमानों ने सैकड़ों वर्षों तक भारत पर शासन किया लेकिन लोगों को इस्लाम धर्म में शामिल करने का अभियान कभी नहीं चला; आज तक भारत एक हिंदू बहुल देश है ।

'जिहादी' और *'जिहादवाद'* आधुनिक शब्द हैं जिनका उपयोग मीडिया में इस्लामी चरमपंथी और उनकी विचारधाराओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है। ये शब्द एक आधुनिक आविष्कार हैं और इनका इस्लाम में कोई ऐतिहासिक अर्थ नहीं है ।

इस्लाम किसी भी नाजायज़ हिंसा को मंजूरी नहीं देता है। मुसलमानों को केवल आत्मरक्षा में और आक्रामकता विद्रोह में लड़ने की अनुमति है । इस स्थिति में लड़ाई को जिहाद के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा क्योंकि कोई आत्मरक्षा में या आक्रामकता को रोकने के लिए प्रयास कर रहा है । अल्लाह कुरान (२:१९३) में कहता है;

> ***तथा उनसे युध्द करो, यहाँ तक कि फ़ितना न रह जाये और धर्म केवल अल्लाह के लिए रह जाये, फिर यदि वे रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिए ।***

सुल्तान अहमद मस्जिद इस्तांबुल, तुर्की में स्थित एक ऐतिहासिक मस्जिद है । इसमें अब भी नमाज पढ़ी जाती है । यह ब्लू मस्जिद, के मान से लोकप्रिय है, इसका का निर्माण १६०९ और १६१६ के बीच अहमद I के शासन के दौरान किया गया था । इसमें अहमद का मकबरा, एक मदरसा और एक धर्मशाला है ।

इस्लामि शरीयत

शरीयत एक विस्तृत **आचार संहिता** है जो संपूर्ण मानव जीवन को ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप नियंत्रित करती है । इसमें मूल विश्वास (पंथ), भक्ति का तरीका, नैतिकता, सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत, कानून इत्यादि शामिल हैं । शरीयत शब्द का अर्थ है स्पष्ट रास्ता' या 'मार्ग' और इस प्रकार इस्लामी संदर्भ में इसका अर्थ मोक्ष और अनन्त सफलता का मार्ग है। मुसलमान होना शरीयत के अनुसार जीना है क्योंकि यह जीवन का ईश्वरीय मार्ग है ।

इस्लामिक शरीयत के मूल सिद्धांत कुरान और पैगंबर की रवायतों से लिए गए सिद्धांतों के विशिष्ट अनुप्रयोग, साथ ही बदलती स्थितियों को संबोधित करने के लिए कानूनी और धार्मिक फैसलों का चयन और धार्मिक विद्वानों की राय की आम सहमति (अरबी में इज्*मा*) शरीयत को परिभाषित करते हैं ।

मानवीय निर्णय अकेले सही और निष्पक्ष तरीके से संपूर्ण मानवता के लिए आचरण स्थापित नहीं कर सकते हैं । इसका कारण यह है कि मानव निर्णय अहंकार, पूर्वाग्रह, इच्छाओं,

उच्च न्यायालय, मस्कत, ओमान

स्वार्थ, भावनाओं, अल्पदृष्टि और अन्य सभी मानवीय कमजोरियों से नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है । मानवीय आचरण के सही तरीके के लिए हमारे निर्माता, हमारे ईश्वर की आवश्यकता और इस तरफ हमारा मार्गदर्शन यह इस्लामी शरीयत है । यह आचार संहिता है जिसका उद्देश्य मानव जीवन, प्रतिष्ठा, मन, विश्वास, परिवार और संपत्ति की रक्षा करना है ।

शरीयत को अक्सर ऐसे बयान में इस्लामी कानून बताकर इस्तेमाल किया है, वास्तव में जिनके खिलाफ इस्लाम सीख्शा देता है, जैसे महिलाओं का शोषण, बाल विवाह, स्वतंत्रता के प्रतिबंध, और इसी तरह की अन्य अधीनता । इस तरह की बयानबाजी इस्लामी शरीयत की अज्ञानता से निकलती है; यह वास्तव में **आचार संहिता** है जो न केवल उन बुराइयों के लिए समाधान और विद्रोह प्रदान करती है, जिनके लिए शरीयत को गलत तरीके से आरोपित किया गया है, बल्कि मानवता की बुराइयों का भी शरीयत एक समाधान है । उदाहरण के लिए, यह शरीयत है जो मानव समानता पर कानूनों और दिशानिर्देशों को निर्धारित करती है, परिवार में माता-पिता और बच्चों के अधिकार, गरीबों और जरूरतमंदों के अधिकारों, युद्ध के आचरण का युद्ध और मानवीय उपचार, उचित व्यापारिक सिद्धांत, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक शिष्टाचार, राज्य शासन, और इत्यादि का आदेश और दिशानिर्देश देती है ।

निम्नलिखित कुरान के छंद एक उदाहरण है जहां से वाणिज्य पर निष्पक्ष और समान आचार संहिता इस्लामि शरीयत में ली गई है, (कुरान २६:१८१-१८३)।

أَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا۟ مِنَ ٱلْمُخْسِرِينَ ۝
وَزِنُوا۟ بِٱلْقِسْطَاسِ ٱلْمُسْتَقِيمِ ۝
وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

तुम नाप-तोल पूरा करो और कम देने वालों में न बनो । और सीधी तराज़ू से तोलो । और मत कम दो लोगों को उनकी चीज़ें और धरती में उपद्रव फैलाते मत फिरो ।

इस्लाम के माननेवालों में विभाजन

पैगंबर के समय और उनकी मृत्यु के बाद पहले तीन खलीफाओं के समय के दौरान, मुस्लिम एक एकल समुदाय थे, भले ही विशेष रूप से तीसरे खलीफा उथमन इब्न अफान (६४४-६५६ ई) के कार्यकाल के दौरान शासन में कुछ मतभेद थे । अगले खलीफा अली इब्न अबी तालिब (६५६-६६१ ई) के कार्यकाल के दौरान राजनीतिक असंतोष और अंततः विद्रोह का उदय हुआ । आगामी संघर्ष और युद्ध तीन गुटों में परिणत हुए; जो लोग हज़रात अली से लड़ रहे थे, जो लोग हज़रात अली और उनके विरोधियों के बीच मध्यस्थता से सहमत थे, और जो शुरुआत में हज़रात अली के साथ थे, लेकिन अली के विरोधियों के साथ मध्यस्थता से असहमत थे । इसलिए ऐतिहासिक रूप से, मुस्लिम समुदाय में विभाजन प्रकृति में राजनीतिक थे । इस्लामी इतिहास में इस मोड़ पर राजनीतिक प्रभाव कानूनी प्रभाव से अलग होने लगे; तीन शिविरों में कई मुस्लिम विद्वान पैदा हुए जिन्होंने शरीयत के निर्धारण के सिद्धांतों और अवधारणाओं को आकार दिया जो पहले से ही उपयोग किए जा रहे थे। महान मुस्लिम न्यायविद निर्गत हुए: जाबिर बिन ज़ायद (६३९-७०९ ई), अबू हनीफा (६९९-७६७ ई), जाफ़र सादिक (७०२-७६५ ई), मलिक (७११-७९५ ई), शाफ़ई (७६७-८२० ई), और इब्न हनबल (७८०-८५५ ई) । इन विद्वानों में से प्रत्येक इमाम के रूप में संदर्भित किया, जो उत्कृष्ट धार्मिक और कानूनी छात्रवृत्ति के लिए एक सम्मानजनक उपाधि है, उन्होंने कानून और कानूनी नियमों का निगमन करके एक पद्धति विकसित की और अनुयायियों का एक समूह इकट्ठा किया । १०वीं सदी तक इन महान विद्वानों द्वारा निर्धारित सिद्धांत अच्छी तरह से परिभाषित "न्यायशास्त्र के संप्रदाय" में विकसित हुए थे और विद्वानों की अनन्य निष्ठा को अपनाया था । इस प्रकार, जाबिर बिन जायद के संप्रदाय को इबादी के रूप में जाना जाता है, अबू हनीफा के संप्रदाय को हनफी के रूप में जाना जाता है, इसी तरह जाफर सादिक को शिया के रूप में जाना जाता है, मलिक के संप्रदाय को मलिकी के नाम से जाना जाता है, शाफ़ई के संप्रदाय को शाफ़ई के रूप में जाना जाता है । और इब्न हनबल को हनबली के नाम से जाना जाता है, हालांकि इनमें से किसी भी इमाम का इरादा किसी अलग संप्रदाय को बनाने का नहीं था । अगली तीन शताब्दियों में, सामान्य मुसलमान भी इन में से एक विशेष संप्रदाय का पालन करने लगे और कानूनी और धार्मिक फैसलों के लिए इसके प्रति विशेष निष्ठा रखने लगा ।

इन सभी "न्यायशास्त्र के संप्रदाय" के साथ, सभी मुस्लिम धर्मग्रंथ, कुरान, जो चौदह शताब्दियों पहले अवतरित हुआ और आज तक अपरिवर्तित रहा है, और पैगंबर मुहम्मद (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद हो उनपर) की रवायतों से एकजुट होते हैं । दुनिया भर के मुसलमान आस्था और धर्म के सिद्धांतों में भिन्न नहीं हैं और धार्मिक अनुष्ठान जैसे इबादत (भक्ति) और तीर्थयात्रा एकता में करते हैं ।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस्लाम धर्म लोगो को संप्रदायों में विभाजित होने से रोकता है । अल्लाह कुरान ३:१०३ में कहता है,

> ***और तुम सब के सब मिलकर ईश्वर की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में फूट न डालो***

इस आदेश की भावना में, न्यायशास्त्र के सभी मुस्लिम संप्रदाय सदियों से एक ही समुदाय के रूप में रहते थे । दुर्भाग्यपूर्ण मुस्लिम संघर्ष जो हमने इतिहास में देखे हैं और जो हाल के दिनों में भड़क उठे हैं, उनका धर्म से कोई लेना-देना नहीं है, बल्की वे भू-राजनीतिक संघर्ष हैं ।

उमय्यद मस्जिद, जिसे दमिश्क की पुरानी मस्जिद के रूप में भी जाना जाता है, पुराने शहर दमिश्क में स्थित है, जो दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी मस्जिदों में से एक है । इसे कुछ मुसलमानों द्वारा इस्लाम में चौथा सबसे पवित्र स्थान माना जाता है ।

इस्लाम में मूलभूत मानवाधिकार

मानवजाति ईश्वर की सब से सम्मानित रचना है । अल्लाह कुरान (१७:७०) में कहता है:

> *हमने आदम के बेटों को सम्मान दिया है ...; उनपर विशेष एहसान किया और हमारी बहुत सारे रचनाओं पर उन्हें सम्मानित किया ।*

इस सम्मान के संरक्षण में, इस्लाम ने सभी मानवता के लिए बुनियादी अधिकारों कीस्थापना की है, फिर चाहे मनुष्य की आस्था, नस्ल या स्थिति कुछ भी हो । इस्लाम में कुछ प्रमुख मूल अधिकार जैसा कि कुरान में निर्धारित है, निम्नलिखित है:

1. आत्मा की पवित्रता और जीवन का अधिकार । जिसके बारे में धरा १५, और क़ुरान (५:३२) वर्णित है, अल्लाह कहता है:

   > *...दरिद्रता के भय से अपनी औलाद को मार न डालना..... अल्लाह ने जीवन को पवित्र बनाया है, न्याय और कानून की स्थापना के अलावा, कोई जीवन न लो । वह तुमको आज्ञा देता है, ताके तुम ज्ञान सीख सको । (क़ुरान ६:१५१)*

2. जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का अधिकार । मुसलमानों के लिए यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि साथी मनुष्यों के बुनियादी ज़रूरतों का ख्याल रखे ।

   > *और उनके धन संपत्ति में माँगने वाले और न माँगने वाले (दोनों) का हिस्सा था, क़ुरान । (५१:१९)*

   गरीबों की मदद करना और जरूरतमंदों की देखभाल करना न तो उनपर कोई एहसान है और न ही विशेषाधिकार, बल्कि गरीबों और जरूरतमंदों का अधिकार है ।

3. अपने सभी पहलुओं में स्वतंत्रता का अधिकार

   > *फिर वह घाटी पर से होकर (क्यों) नहीं गुज़रा, और तुमको क्या मालूम*

कि घाटी क्या है, किसी (की) गर्दन का गुलामी या कर्ज़ से छुड़ाना (क़ुरान ९०:११-१३)

गुलामी के कई प्रकार हैं । इनमें शारीरिक और आर्थिक दासता, जबरन श्रम, यौन शोषण और अन्य प्रकार के शोषण शामिल हैं ।

पैगंबर मुहम्मद (शांति हो उन पर) ने कहा:

लोगों की तीन श्रेणियां हैं जिनके खिलाफ मैं खुद निर्णय के दिन खड़ा हो जाऊंगा । इन तीनों में से एक वह है जो एक आज़ाद को गुलाम बनाता है ।

चीन, स्थित क्सियन, की महान मस्जिद । ७वीं सदी की शुरुआत में चीन का इस्लाम से परिचय हो गया था । आज चीन में २० करोड़ से अधिक मुस्लिम हैं ।

इस प्रकार, इस्लाम ने ७वीं सदी में ही ग़ुलामी को समाप्त कर दिया । जबकि पश्चिमी देशो में १९वी सदी में ग़ुलामी समाप्त हुई थी ।३८

4. सभी मनुष्यों की समानता: सभी लोगों को समान माना जाता है और ईश्वर के सामने उत्कृष्टता का एकमात्र मानक चरित्र की शुद्धता और उच्च नैतिकता है ।

हे मनुष्यो! हमने तुम्हें पैदा किया एक नर तथा नारी से तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ, ताकि एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में, तुममें अल्लाह के समीप सबसे अधिक आदरणीय वही है, जो तुममें अल्लाह से सबसे अधिक डरता हो । वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला है, सबसे सूचित है । क़ुरान (४९:१३)

5. समाज में किसी की स्थिति की परवाह किए बिना, सभी सामाजिक और आर्थिक मामलों में न्याय और निष्पक्षता का अधिकार ।

हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रहकर अल्लाह के लिए साक्षी (गवाह) बन जाओ । यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुध्द हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो, तो अल्लाह तुमसे अधिक उन दोनों का हितैषी है । अतः अपनी मनोकांक्षा के लिए न्याय से न फिरो । यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो निःसंदेह अल्लाह उससे सूचित है, जो तुम करते हो । क़ुरान (४:१३५)

6. सम्मान, सुरक्षा और व्यक्ति की निजता की सुरक्षा ।

हे ईमान वालो! हँसी न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की । हो सकता है कि वह उनसे अच्छी हो और न नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि वो उनसे अच्छी हों तथा आक्षेप न लगाओ एक-दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो । बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात् और जो क्षमा न माँगें, तो वही लोग अत्याचारी हैं । (क़ुरान ४९:११)

इसके अलावा, क़ुरान के छंद ४९:१२ में, अल्लाह कहता है:

हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचो अधिकांश गुमानों से । वास्व में, कुछ गुमान पाप हैं और किसी का भेद न लो और न एक-दूसरे की ग़ीबत करो । क्या चाहेगा तुममें से कोई अपने मरे भाई का मांश खाना? अतः, तुम्हें इससे घृणा होगी तथा अल्लाह से डरते रहो । वास्तव में, अल्लाह अति दयावान्, क्षमावान् है ।

7. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जो सही और न्यायपूर्ण हैउसके लिए आवाज उठाना ।

तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं । वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं ..... (क़ुरान ९:७१)

इसके अलावा, क़ुरान में (४:१४८) में, अल्लाह कहता है:

अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिसपर अत्याचार किया गया हो और अल्लाह सब सुनता और जानता है ।

8. आस्था की स्वतंत्रता और किसी के आस्था को पालन करने की स्वतंत्रता । मुसलमानों का विश्वास है कि, इस्लाम के सत्य की तरफ मानव जाति को आमंत्रित करना उनका कर्तव्य है । हालाँकि, किसी को भी आस्था में मजबूर करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि आस्था आत्मा में दृढ़ विश्वास और ईमानदारी का नाम है । अल्लाह कुरआन की आयत (२:२५६) में कहता है,

धर्म में बल प्रयोग नहीं । सुपथ, कुपथ से अलग हो चुका है ।

इस्लाम में आस्था की यह स्वतंत्रता कुरान में कई जगह दोहराई गई है ।३९

इन इस्लामी मूल्यों के अलावा कुरआन में निर्धारित सिद्धांतों, और पैगंबर की रावत सब सार्वभौमिक हैं और मानव अधिकारों और लोकतंत्र के आवश्यक तत्वों का गठन करते हैं।

इस्लाम में सांस्कृतिक विविधता

इस्लाम लोगों के रीति-रिवाजों, नस्ल, भाषाओं, पहनावों, भोजन, कला, लोककथाओं और अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में विविधता को स्वीकार करता है, क्योंकि यह न केवल वैध है, बल्कि अल्लाह के इनामों का संकेत भी है । हालाँकि, इस्लाम संस्कृति के उन पहलुओं को स्वीकार नहीं करता है और यहां तक कि उनकी निंदा करता है जो इसकी शिक्षाओं और सिद्धांतों के विपरीत हैं । अल्लाह कहता है;

> *तथा उसकी निशानियों में से है, आकाशों तथा धरती को पैदा करना तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना । निश्चय इसमें कई निशानियाँ हैं, ज्ञानियों के लिए । (क़ुरान ३०:२२)*

क़ुरान की एक अन्य आयात में, अल्लाह कहता है;

> *ऐ लोगों! हमने तो तुम को पुरुष और महिला से बनाया है, और तुमको राष्ट्रों और जनजातियों में बनाया है, ताकि तुम एक दूसरे को जान सको । इसमें संदेह नहीं कि ईश्वर के नज़दीक तुम सब में बड़ा कुलीन और ईश्वरीय चेतना वाला हो । निसंदेह ईश्वर बड़ा ज्ञानवाला और ख़बरदार है । (क़ुरान ४९:१३)*

आधुनिक वैश्वीकृत दुनिया में, लोग अक्सर विभिन्न नस्लीय, जातीय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बंधित मुसलमानों में दिखाई देने वाले मतभेदों को देखते हैं । सांस्कृति और धर्म, इसके बीच अंतर करना महत्वपूर्ण हो जाता है और मुस्लिम दुनिया के भीतर मौजूद सांस्कृतिक विविधता की समझ बनाने के लिए धर्म और संस्कृति के बीच परस्पर क्रिया को जानना भी ज़रूरी है ।

जिस तरह से इस्लाम दुनिया भर की संस्कृतियों में खुद को प्रकट करता है, उसमें कई विभिन्नता हैं । इससे किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि एक सार्वभौमिक धर्म होने के नाते, इस्लाम दुनिया के हर कोने में व्यावहारिक रूप से फैल गया है । इस प्रसार में संस्कृतियों की विविधता शामिल है, जो सभी इस्लामी ढांचे के भीतर ही व्यक्त की जाती हैं । इसका मतलब है, मेजबान देश के बावजूद, इस्लाम का मूल - आस्था और व्यक्तिगत व्यवहार की अनिवार्यता - सभी मुसलमानों के लिए एक सामान्य केंद्रबिंदु के रूप में कार्य करता है ।

उदाहरण के लिए, सभी मुसलमान एक ईश्वर में विश्वास करते हैं । वे सभी स्वर्गदूतों, फरिश्तों पर विश्वास करते हैं । वे सभी एक ही कुरान को पढ़ते और दर्शाते हैं । वे सभी पैगंबर मुहम्मद (शांति उहो उन पर) को मानते हैं और उनका पालन करते हैं । वे सभी निर्णय के दिन और मृत्यु के बाद जीवन में, और व्यक्तिगत जवाबदेही में विश्वास करते हैं । वे सभी ईश्वरीय संकल्प और नियति में विश्वास करते हैं । इस्लाम के पांचो स्तंभ दुनिया भर के सभी मुसलमानों के लिए समान हैं । चाहे आप ओमान में हों या इंडोनेशिया या सेनेगल या चीन में या भारत में आप को एक ही जैसी अज़ान (प्रार्थना के समय का आवाहन) सुनने मिलेगी । दुनिया भर के मुसलमान रमजान के महीने के दौरान एक साथ उपवास करते हैं और तीर्थयात्रा या हज के वार्षिक अनुष्ठानों के दौरान मक्का में एक साथ जुड़ते हैं । इसलिए, इस्लाम में सांस्कृतिक विविधता के भीतर बुनियादी विश्वास और प्रथाओं की एकता की एक मजबूत भावना है ।

बेशक, धर्म कभी भी संस्कृतिहीन निर्वात के भीतर मौजूद नहीं होती है । यह हमेशा एक सांस्कृतिक समायोजन के भीतर अभिव्यक्ति पाता है । इसी के साथ, संस्कृतियां बहुमत के नैतिक मूल्यों और धार्मिक शिक्षाओं के बिना आयोजित कभी भी विकसित नहीं होती हैं । "इसलिए, न तो कोई धार्मिक रूप से तटस्थ संस्कृतियां हैं और न ही कोई संस्कृति-मुक्त धर्म ।४० किसी भी समय और स्थान पर मुसलमानों (और गैर-मुसलमानों) के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि इन शिक्षाओं और सिद्धांतों पर अक्सर व्याख्या की सांस्कृतिक परतों से इस्लाम के कालातीत और सार्वभौमिक शिक्षाओं और सिद्धांतों को अलग करके देखना है । यहां तक कि पैगंबर मुहम्मद, (शांति हो उन पर) का अनुमान लगाया गया है कि मुसलमान अनिवार्य रूप से उन परिस्थितियों का सामना करेंगे जो कुरान या सुन्नत में वर्णित नहीं होंगे । हमेशा नई सांस्कृतिक और कानूनी स्थितियां होंगी जिनके लिए महत्वपूर्ण विश्लेषण और व्यावहारिक और संवेदनशील न्यायिक विद्वानों की बुद्धि की आवश्यकता होगी । निश्चित रूप से, विश्व क्षेत्रों और युगों में नए मुद्दे होंगे जो पैगंबर (शनती हो उनपर) के समय अनुभव में नहीं आये होंगे और अधिक होंगे, और इसलिए, सांस्कृतिक बारीकियों का निर्वाचनों और विकसित सांस्कृति के लिए प्रतिक्रिया यह ऐसे कार्य हैं जिसे मुसलमान हमेशा से करता चला आरा है ।

पर्यवेक्षक, विशेष रूप से पश्चिमी देशो से आने वाले, आमतौर पर मुस्लिम समाजों का मूल्यांकन करते समय, अपनी समझ बनाने के लिए, दो दृष्टिकोणों में से एक लेते हैं । पहला दृष्टिकोण, मुसलमानों को एकल अखंड और अपरिवर्तनीय इकाई के रूप में देखा जाता है । जहाँ भी मुसलमान है, बावजूद अलग-अलग भूगोल और समय के होते हुए भी, वे एक समान हैं ।४१ यह दृष्टिकोण आधुनिक मुस्लिम दुनिया में दिखाई देने वाली सांस्कृतिक विविधता की उपेक्षा करता है । दूसरा दृष्टिकोण, पहले वाले से बहुत विपरीत है । इस्लाम अपने धर्मग्रंथों से अलग मुख्य रूप से अपने अनुयायी लोगों के साथ पहचाना जाता है । चूंकि मुसलमान विविध लोग हैं, इसलिए अलग-अलग "इस्लाम" हैं, जैसे तुर्की इस्लाम, लेबनानी इस्लाम, ओमानी इस्लाम, इंडोनेशियाई इस्लाम, आदि । इस दृष्टिकोण के अनुसार, इस्लाम की एकात्मक दुनिया नहीं है, बल्कि कई दुनिया में कई "इस्लाम" हैं । परिस्थितियों के आधार पे बहुत से "इस्लाम" है में जो उन्हें निर्वाह करती हैं ।४२ यहां, सांस्कृतिक विविधता रेखा को उस बिंदु तक बढ़ाया गया है जहां इस्लाम अपनी इकाई खो कर राष्ट्रीय पहचानों में टूट गया है । समय और स्थान में इस्लाम के अद्वितीय अनुभवों के बारे में बात ही अधिक सही दृष्टिकोण होगा । इस्लाम धर्म के रूप में कुरान और हदीस, सुन्नत (पैगंबर के व्यावहारिक उदाहरण) के पाठ स्रोतों में संरक्षित किया गया है । पाठ के रूप में इस्लाम नहीं बदलता है, लेकिन मुसलमान एक शून्य में अस्तित्व नहीं हैं । वे एक निश्चित समय और एक विशेष स्थान पर रहते हैं । एक विशेष भूगोल की परिस्थितियाँ और समय के मुद्दे और चुनौतियाँ, एक संदर्भ प्रदान करते हैं, जिन की लिए मुस्लिम कुरान और सुन्नत से प्रेरणा लेते हैं । इस मामले में, 'पाठ' और 'संदर्भ' दोनों एक पोत प्रदान करते हैं जहां इस्लाम के अनूठे अनुभवों को एक अपरिवर्तित पाठ की ताजा समझ और व्यावहारिक व्याख्या के माध्यम से उत्पादित किया जाता है ।४३

व्यक्तिगत स्तर पर, इस्लाम का अनुभव एक मुस्लिम के लिए उसकी शिक्षाओं उसके ज्ञान, समझ के स्तर और उन शिक्षाओं के आंतरिककरण पर निर्भर करता है, और उन शिक्षाओं का मुसलमनो द्वारा जिस स्तर पर अभ्यास किया जाता है उस पर नहीं निर्भर करता है । इसी तरह, प्रत्येक मुस्लिम समाज अपने समय और भूगोल में मौजूद कारकों के आधार पर इस्लाम का अनुभव करता है। मुसलमान, इसलिए अखंड इकाई नहीं हैं और न ही कई 'इस्लाम' हैं। बल्कि, व्यक्तियों और मुस्लिम समाजों द्वारा इस्लाम के अनूठे अनुभव हैं । ये अनुभव

अपरिहार्य हैं और वे मुस्लिम दुनिया में हमारे द्वारा देखी जाने वाली सांस्कृतिक विविधता की व्याख्या करते हैं । यह विविधता, वास्तव में, अपने प्रमुख सिद्धांतों और शिक्षाओं को बनाए रखते हुए विभिन्न संस्कृतियों के लिए इस्लाम की अविश्वसनीय अनुकूलनशीलता का प्रमाण है । मुसलमान इस संतुलन को ईश्वर की दूरदर्शी और दया के प्रमाण के रूप में देखते हैं । इस्लाम बहुत ही सांस्कृतिक-अनुकूल है और यह हमेशा एक संस्कृति को बेहतर बनाने और बढ़ाने का प्रयास करता है । अफसोस है कि कुछ मुसलमान अज्ञान से या ऐतिहासिक जागरूकता की कमी से सांस्कृतिक मानदंडों को अपनी इस्लामी जड़ों से जोड़ने में विफल होते हैं । जब ऐसा होता है, तो सांस्कृतिक आदतें जो इस्लाम की भावना और शिक्षाओं के लिए विरोधी हैं, विकसित कर सकती हैं और यह धारणा दे सकती हैं कि एक विकृत या विनाशकारी सम्मेलन वास्तव में इस्लामी है ।४४ कुछ मुस्लिम समाजों के भीतर कई ऐसी बुरी सांस्कृतिक प्रथाएं हैं जो गलत तरीके से इस्लाम से जुड़ी हैं या इनका जिम्मेदार गलती से इस्लामी शिक्षाओं को ठहराया जाता है । इन प्रथाओं में जबरन विवाह, बाल विवाह, सम्मान हत्या, पुरुष बच्चे के लिए वरीयता और महिला जननांग विकृति शामिल हैं । ये सभी प्रथाएं गैर-इस्लामी हैं, फिर भी वे गलत धारणाओं को खत्म करने और इस्लाम के बारे में नकारात्मक रूढ़ियों को मजबूत करने का काम करती हैं ।

मस्जिद में एक अध्ययन चक्र में युवा मुस्लिम छात्र कुरान का पाठ करते हुए, नेकहोन-श्री-थम्मरत, थाईलैंड ।

धर्म क्यों महत्वपूर्ण है?

धर्म के महत्वपूर्ण होने के छह कारण हैं:

1. हमारे मूल्यों, व्यवहार और कार्यों को हमारे आंतरिक विवेक में आदर्श के रूप में माना जाता है । यह मानदंड को हमारी संस्कृति से आकार मिला जो हमें विरासत में मिला है। सांस्कृतिक मानदंड आस्था से बहुत प्रभावित होता है, फिर चाहे जो भी आस्था हो । एक सांस्कृतिक आदर्श (या मानदंड) के बिना हमारा जीवन का उन्मुखीकरण भ्रमित हो जाएगा, जिससे दिशा की भावना की कमी हो सकती है, समाज द्वारा बताए गए मूल्यों और मानदंडों का खालीपन और टूट के बिखरना, इस प्रकार सामाजिक और साथ ही व्यक्ति के आंतरिक विकार का निर्माण होता है । इसलिए, शुरुआत में धर्म महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विश्वास को परिभाषित करता है जो हमारे सांस्कृतिक आदर्श और विश्वदृष्टि को परिभाषित करता है। यह हमारे सामाजिक के साथ-साथ व्यक्तिगत ईमानदारी की गारंटी देने वाला भी है ।

2. धर्म ईश्वर से संबंधित ज्ञान का एकमात्र स्रोत है: वह कौन है, उसकी विशेषताएँ क्या हैं और उसका स्वभाव क्या है? इस प्रकार, धर्म महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्म को अस्वीकार करना ईश्वर को अस्वीकार करने के समान है ।

3. धर्म ज्ञान का एकमात्र स्रोत है जो उन चीजों से संबंधित है जो मानवीय धारणा, या सोच से परे हैं लेकिन फिर भी वास्तविक हैं । यह धर्म हैं जो मानव आत्मा की अनंत प्रकृति, मृत्यु के बाद के जीवन, फरिश्तों, इत्यादि के बारे में बताता है । इस प्रकार, धर्म के बिना व्यक्ति इन वास्तविकताओं से पूरी तरह से बेखबर है जो हमारी शारीरिक धारणा से परे हैं ।

4. धर्म हमें जीवन के उद्देश्य के बारे में बताता है: मैं यहाँ क्यों हूँ? मैं आखिर कहां जा रहा हूं? इस जीवन में मेरीपसंद या इच्छा के परिणाम क्या हैं? बहुत से लोग निराशा में हैं क्योंकि उनके पास जीवन में इस उद्देश्य की कमी है ।

5. धर्म को जीवन के तरीके के रूप में परिभाषित किया गया है; जीने की एक संहिता जिसका उद्देश्य मानवीय गरिमा और सुरक्षा की रक्षा करना और संरक्षण करना है और

साथ ही साथ एक सामंजस्यपूर्ण और खुशहाल जीवन के लिए परिस्थितियां बनाना है । हमारे जीने के लिए धर्म नैतिक मानकों और न्यायसंगत न्याय प्रणाली को परिभाषित करता है । धर्म को अनदेखा करने से मानव बुराइयों की पूरी सूची बन जाती है; शोषण, अन्याय, उत्पीड़न, लालच, भेदभाव, भ्रष्टाचार, और बहुत । हमारे अपने सामूहिक भलाई के लिए धर्म आवश्यक है ।

6. अंतिम में, धर्म महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस बारे में बताता है कि हम अपने अगले जीवन की तैयारी कैसे कर सकते हैं । जैसा कि धारा 9 में तर्क दिया गया है, मृत्यु के बाद का जीवन एक वास्तविकता है और जो आगे आनेवाला है वह उन विकल्पों पर निर्भर करता है जो हम इस जीवन में करते हैं । धर्म हमें बताता है कि हमारा निर्माता हमसे क्या उम्मीद कर रहा है, हमें अपने जीवन का संचालन कैसे करना चाहिए और इस जीवन के बाद हमारे कार्यों के परिणाम क्या होंगे ।

धर्म के बिना जीवन, जीवन के उद्देश्य और हमारे अस्तित्व के व्यापक दृष्टिकोण से अनजान है, साथ ही ऐसा जीवन जिसमें आने वाली चीजों की दृष्टि का अभाव है । यह कतई समझदारी नहीं है कि हम धर्म को अनदेखा करें और जैसा की कुरान के निम्नलिखित श्लोक हमें चेताते है (६७:६-१२)

और जिन्होंने कुफ्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिए नरक की यातना है । और वह बुरा स्थान है । जब वह फेंके जायेंगे उसमें तो सुनेंगे उसकी दहाड़ और वह खौल रही होगी । प्रतीत होगा कि फट पड़ेगी रोष (क्रोध) सेर, जब-जब फेंका जायेगा उसमें कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उनसे उसके प्रहरीः क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)? वह कहेंगेः हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला । पर हमने झुठला दिया और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो । तथा वह कहेंगेः यदि हमने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते । ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी है नरक वासियों के लिए । अर्थात अल्लाह की दया से । निःसंदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिए क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है ।

मुसलमान कैसे बन सकते है?

इस्लाम, आस्था के छह और धर्म के पांच स्तंभ पर आधारित है जिनका वर्णन इस पुस्तक के खंड २ में किया गया है । एक बार इन सिद्धांतों को समझने और स्वीकार करने के बाद, कोई व्यक्ति केवल निम्नलिखित की घोषणा करके मुसलमान बन जाता है:

अश-हदु अल्लाह इल्लाह इल्लल्लाह व
अशदुहु अन्न मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत (भक्ति) के योग्य नहीं है; और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ।

इस कथन को अरबी भाषा में *शहादा कहा* जाता है, जिसका अर्थ है आस्था की प्रतिज्ञा और पुष्टि । इसे पहले अरबी में कहा जाता है और फिर उस भाषा में जिसे नए मुस्लिम द्वारा समझा जाता है ।

शाहद का उच्चारण करने के, मुसलमान बनने के बाद विश्वास और धर्म के स्तंभ यकींन और उनका पालन करने के लिए प्रतिबद्ध हो जाता है ।

जब एक गैर-मुस्लिम इस्लाम को स्वीकार करता है, तो वह वास्तव में अपने 'जन्म के धर्म' की ओर लौटता है, क्योंकि हर कोई मुस्लिम ही पैदा होता है। अर्थात्, जन्म के समय हर कोई प्रकृति के अनुसार अल्लाह की इच्छा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होता है और उसे बुनियादी नैतिकता के प्रति जन्मजात जागरूकता होती है (अरबी में फितरा) । जैसा व्यक्ति बड़ा होता है, यह माता-पिता और आसपास की संस्कृति है जो व्यक्ति को एक विशेष धर्म की ओर ले जाती है । इसलिए सत्य की तलाश, आस्था और धर्म को समझना, व्यक्ति पर निर्भर और उसकी ज़िम्मेदारी है ।

आस्था के बारे में सत्य

1. जन्म के अवसर और पूर्वजों का अनुसरण के आधार पर अंधी आस्था कोई आस्था नहीं है।
2. सच्ची आस्था ज्ञान, तर्क और कारन पर आधारित होना चाहिए ।
3. किसी के आस्था का आधार ठोस प्रमाण द्वारा समर्थितहोना चाहिए ।

ध्यान दें (नोट): इस्लाम में, आस्था और कारण परस्पर अनन्य नहीं हैं । अपनी आस्था को साबित करने और मजबूत करने के लिए कारण का उपयोग करना आवश्यक है।

शब्दकोष

अल्लाह: सृष्टि के रचयिता और ईश्वर का व्यक्तिगत नाम । (धारा ३ देखें)

आयत: कुरान में कोई भी श्लोक इसका अर्थ 'ईश्वर की पहचान के संकेत चिन्ह' भी है ।

खलीफा: मुस्लिम समुदाय के नेता । यह अरबी शब्द खलीफा से आया है जिसका अर्थ 'प्रतिनिधि' भी है ।

हदीस: हदीस (या हदीथ) और सुन्नत (क्रमश) पैगंबर मुहम्मद (शांति हो उन पर) का जीवन और जीवन के उदाहरण हैं । वे पैगंबर के उपदेशों का अंग बनाते हैं जिन्हें सामूहिक रूप से 'पैगंबर की सुन्नत' कहा जाता है । (धारा ८ देखें)

हज: मक्का में मुस्लिम वार्षिक तीर्थ । (धारा २ देखें)

हिजरा: मक्का से मदीना तक मुसलमानों का पलायन ६२२ ई. में हुआ था । इसने मुस्लिम कैलेंडर की शुरुआत को चिह्नित किया जिसे हिजरा कैलेंडर कहा जाता है । (धारा ४ देखें)

इबादी: इस्लामी संप्रदाय, स्कूलों के कानून में से एक । (धारा १८ देखें)

इस्लाम: उस धर्म का नाम जो सृष्टिकर्ता, अल्लाह की पवित्रता में विश्वास करने और उसकी इच्छा के प्रति कुल स्वीकृति और आज्ञाकारिता के लिए कहता है । (धारा २ देखें)

जिहाद: अल्लाह के कार्य के लिए प्रयास करना या संघर्ष करना । इस प्रकार, आस्तिक की प्रत्येक क्रिया जो अल्लाह की खुशी और अनुमोदन अर्जित करने के इरादे से की जाती है, वह जिहाद है । (धारा १६ देखें)

काबा: एक ईश्वर की इबादत (भक्ति) के लिए पृथ्वी पर बनायागया पहला घर । यह मक्का में महान मस्जिद के परिसर के भीतर स्थित है और इसे आमतौर पर काले कपड़े में लपेटा जाता है ।

मदीना: सऊदी अरब का एक शहर मक्का से लगभग ४०० किलोमीटर उत्तर में स्थित है । यह इस्लाम की दूसरी पवित्रतम मस्जिद, पैगंबर की मस्जिद, (अरबी में मस्जिद अल-नबावी) का स्थान है ।

मक्का: सऊदी अरब के पश्चिमी भाग में स्थित एक शहर । यह काबा का स्थान है और यहाँ इस्लाम में पहली पवित्र मस्जिद है (अरबी में मस्जिद अल-हरम) ।

मुस्लिम: एक व्यक्ति जो इस्लाम धर्म के सिद्धांतों को मानता है और उसका पालन करता है ।

किबला: मक्का, काबा की दिशा जिस ओर मुसलमान नमाज़ अदा करते हैं ।

कुरान: पैगंबर मुहम्मद (शांति उस पर हो) पर अवतरित अंतिम दिव्य संदेश । (धारा ६ देखें)

शरीअत: इस्लामी आचार संहिता जिसमें बुनियादी विश्वासों (पंथ),इबादत के तरीके, नैतिकता, सामाजिक-आर्थिक सिद्धांतों और दंड के नियम को शामिल करती है । (धारा १७ देखें)

शिया ': इस्लामी समुदाय, स्कूलों के कानून में से एक । (धारा १८ देखें)

सुन्नी: इस्लामी समुदाय, स्कूलों के कानून में से एक । (धारा १८ देखें)

सूरा: कुरआन का अध्याय ।

उम्मत: जग का पूरा मुस्लिम समुदाय ।

टिपण्णी

1. जब भी पैगंबरों के नामों का उल्लेख किया जाता है, तो मुसलमान (शांति / आशीर्वाद अल्लाह का उन पर हो) कहकर अल्लाह का आह्वान करते हैं । (कुरआन ३३:५६, ३७:१८१ भी देखें)

2. कुरआन (२:१३२, १३६, २२:७८)

3. कुरान के कई छंदों में विश्वास के लेख, स्तंभ को घोषित किए गए हैं; उदाहरण के लिए, २:३-४, २:२८५, ४:१३६, ५४:४९, और अन्य छंद ।

4. कुरआन में यह स्पष्ट है कि हमारे कार्य ईश्वर द्वारा पूर्व निर्धारित नहीं हैं । उदाहरण के लिए देखें ४:६२, १०:४४, १३:११, १८:२९, ३०:४१, और अन्य छंद ।

5. कुरान में धर्म के लेखों, स्तंभ को कई छंदों में घोषित किया गया है; उदाहरण के लिए, (२:३, २:४३, २:१८३, २:१९६, ३:९७, २२:७८) और अन्य छंद।

6. तक़्वा का शाब्दिक अर्थ है डरना या रक्षा करना । इसका अर्थ है अपने आप को अल्लाह के प्रकोप से बचाने और उनकी उपस्थिति से डरने और सचेत रहने का प्रयास । यह ईश्वर-चेतना धर्मपरायणता या धार्मिकता की प्राप्ति के लिए एक प्रेरक शक्ति है, अर्थात् अच्छाई करना और बुराई से रुकना ।

7. क़ुरान ७:१५८, २१:१०७, ३३:४०, ३४:२८

8. नेतृत्व का यह प्रस्ताव उतबा बिन राबियाह (अबू सुफियान के ससुर) द्वारा किया गया था, जो मक्का में गणमान्य लोगों में से था ।

9. क़ुरान २९:५०-५१

10. पवित्र कुरान, अनुवाद व तफ़सीर, ए युसुफ अली, द इस्लामिक फाउंडेशन, लंदन, १९७५ द्वारा पवित्र क़ुरआन, अनुवाद और व्याख्या । आयत ७:१५७ पर टिप्पणी ।

11. क़ुरान ३:३, ४:४७, ५:४८, १५:९, २६:१९२-१९६, ७६:२३ और अन्य आयत ।

12. अल्लाह और शेष सृष्टि के साथ मनुष्य का संबंध कुरान में कई छंदों में घोषित किया गया है । उदाहरण के लिए; १:२, २:२१-२२, २:२५७, ७:५४, ५०:२१, ८२:१०-१२, १८:५०, ६:११२, १२:५, ६:३८, २:१६४, ३१:१०, ३६:७१-७३, और अन्य छंद ।

13. कुरआन २:३८-३९, २:८१-८२, १७:९-१०, और अन्य छंद।

14. कुरआन ३:१३७,१०:७१–७३; ११:२५-४९, १२:१-११३, १७:२-८, ७१:१-२८ और अन्य छंद।

15. कुरान में पहाड़ों की भूवैज्ञानिक अवधारणा, एल-नागर, पृष्ठ ५

16. इस विषय पर और पढ़ने के लिए कृपया (i) कुरान और मॉडर्न साइंस, डॉ. ज़ाकिर नाइक द्वारा, (ii) द बाइबल, कुरान और साइंस, मौरिस बुकेले द्वारा, (ii) कुरान: उन्चल्लेंजएब्ले मिराक्लेस कैंसर तसलामन द्वारा, एंडर गुरोल द्वारा अनुवादित इन किताबों का भी अध्ययन करें ।

17. क़ुरान २:३४, १७:६१

18. क़ुरान १४:४४-४६, ७४:८-१०, ८०:३३-४६

19. क़ुरान १३:२२-२३, ३६:५५-५६, ५२:२१

20. क़ुरान ५:४८, १६:३६, १०:४७

21. क़ुरान ३:६४-६५; ३:९८–१००, ४:४७, और अन्य छंद ।

22. क़ुरान २:७५, २:७९, २:१४६, १५९, १७४, ३:७१, ४:४६, ५:१३ और ५:१५ ईसाई पृष्ठभूमि के बाइबिल विद्वान भी इस तथ्य पर जोर देते हैं, उदाहरण के लिए देखें (i) बार्ट डी । एरमन द्वारा (i) 'मिकोस्टिंग जीजस' और' (2) ‘जीजस इंटेररुपटेड'

23. क़ुरान ५:४८

24. क़ुरान ११:११८-११९

25. क़ुरान ३:५९, ४:१७१, ५:७५, ५:११६-११७, १९:३०

26. बाइबिल (KJV); मैथूव् २४:३६, जॉन ५:३०, १४:२८, १७: ३ और २०:१७, एक्ट्स २:२२ इस विषय पर आगे पढ़ने के लिए निम्नलिखित साइट पर जाएँ: http://www.islam-guide.com/ch1-10-3.htm आप डॉ. लॉरेंस ब्राउन द्वारा द फर्स्ट एंड फाइनल टेस्टामेंट 'भी पढ़ सकते हैं ।

27. क़ुरान ३:४५, ४:१७१, ५:७२, १९:३०

28. क़ुरान १९:२७–३३, ३:४९; ५:११०

29. क़ुरान ५:११०, ५७:२७

30. बाइबल के सभी संस्करण इस तथ्य की गवाही देते हैं कि ईसा (शांति हो उन पर) 'इज़राइल की सन्तानो' के लिए भेजे गए थे । उदाहरण के लिए, बाइबल (KJV), मैथूव् १०:५ -६, १५:२२-२६ देखें ।

31. वैज्ञानिकों में सर एंटनी फ्लेव थे जो नास्तिकवाद के प्रबल समर्थक थे । २००४ में उन्होंने ईश्वर में अपनी आस्था की घोषणा की और २००७ में एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था - 'दैर इस गॉड : हाउ द वर्ल्ड्स मोस्ट नाटोरेअस एथेस्ट चेंज्ड हीस माइंड' । जिसका अनुवाद है ईश्वर है : कैसे एक खुख्यात नास्तिक ने अपनी सोच बदली ।

32. क़ुरान ७:१७२, ३०:३०

33. क़ुरान ३:८६, १०:९, १३:२७, १७:९७, १८:१७, ४८:४, ७४:३१

34. क़ुरान १७:७०, २३:११५, २९:२, ३०:८

35. इतिहास में महिलाओं के साथ हुए अन्याय के उदाहरण निम्नलिखित हैं: (i) पूर्व-इस्लामिक अरब में शिशु लड़कियों को जिंदा दफनाया जाता था (ii) रोमन सभ्यता ने महिलाओं को दासी माना, जबकि यूनानियों ने महिलाओं को वस्तु माना (iii) फ्रांस में ५८७ इ. में यह तय करने के लिए एक सम्मेलन आयोजित किया गया था कि महिलाएं मनुष्य हैं या नहीं (iv) १८५० से पहले इंग्लैंड में महिलाओं को नागरिक नहीं माना जाता

था, और १८८२ तक उनके पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं था (v) चीनी संस्कृति में पुरुषों को न केवल अपनी पत्नियों को दासी के रूप में बेचने की अनुमति थी, बल्कि उन्हें जिंदा दफनाने की भी अनुमति थी (vi) हिंदुओं ने महिलाओं को मृत्यु, नरक, जहर या आग से भी बदतर माना था ।

36. क़ुरान २:१९०, २:१९३, २:२१७, ४:७५, ८:३९

37. क़ुरान ८:६७-७०, अध्याय ८ और ९ के बड़े हिस्से (साथ ही अन्य अध्याय) में, युद्ध के लिए परिस्थितियों से निपटने, युद्ध के संचालन, युद्ध में, युद्ध के बारे में निर्णय लेने, शरण चाहने वालों, युद्ध की माल का प्रबंधनऔर युद्ध बंदियों के उपचार । यह याद रखना महत्वपूर्ण है मुस्लिम इतिहास में पहले समुदाय थे, जिन्हो ने युद्ध बंदियों के उपचार पर कानून लागू किया था ।

38. उन्मूलन समयरेखा देखें: http://en.wikipedia.org/wiki/Abolition_of_slavery_timeline

39. क़ुरान १०:९९, १०९:१-६ और अन्य छंद ।

40. संदर्भ VI, पृष्ठ १८३

41. संदर्भ VII, पृष्ठ ४

42. संदर्भ VII, पृष्ठ ४

43. संदर्भ VIII, पृष्ठ ४११०-११४

44. संदर्भ VIII, पृष्ठ ११६-११८

संदर्भ

I. पवित्र कुरान, अनुवाद व तफ़सीर, ए यूसुफ अली, द इस्लामिक फाउंडेशन, लंदन १९७५

II. सैय्यद अबुल ए मौलादी, द इस्लामिक फाउंडेशन, लंदनद्वारा 'टुवर्ड्स अंडरस्टैंडिंग कुरान' १९९२

III. कुरआन एंड मॉडर्न साइंस : कनफ्लिक्ट ओर काँसिलिएशन? डॉ. ज़ाकिर नाइक (२००८), इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन, मुंबई, भारत

IV. उलूम अल-कुरान: इंट्रोडक्शन तो साइंस ऑफ़ क़ुरान, अहमद वॉन डेफेर द्वारा, द इस्लामिक फाउंडेशन, लंदन, १९८३

V. मुहम्मद इन हिंदू स्क्रिप्टचर । डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, प्रकाशित ए.एस. नॉरडीन, मलेशिया, २००७

VI. तारिक रमजान, रेडिकल रिफॉर्म: इस्लामिक एथिक्स एंडलिबरेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, २००९

VII. क्लिंटन बेनेट, मुस्लिम एंड मॉडर्निटी: एन इंट्रोडक्शन टू द इश्यूज़ एंड डिबेट्स, कॉन्टिनम, न्यूयॉर्क, २००५

VIII. मेहमत ओज़लप, इस्लाम इन ट्रेडिशन एंड मॉडर्निटी, बार्टन बुक्स, ऑस्ट्रेलिया, २०१२

"अर-रहमान", संपूर्ण दयालु । यह अल्लाह की विशेषताओं में से एक है

टिप्पणियाँ

تعريف الإسلام باللغة الهندية

बिक्री के लिए नहीं है

एटम डीएनए की आणविक संरचना